Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 1

मई, 2026 मूल्यः ₹10.00

कलरव
KALRAV

तपती धरती झुलसता जीवन

Three Unique Dailies For Everyone In The Family

AAJ KA ANAND
Hindi Daily: Published Since 41 years

SANDHYANAND
Marathi Daily : Published Since 20 years

Life 365
English Daily : Recently Lannched, Unique Daily

Aaj Ka Anand Papers Ltd., (Since 1971)

RNI-UPHIN-2006/18176

सच और साहस की थपकी का   मई, 2026

कलरव

ताकि बना रहे अहसास   KALRAV

वर्ष : 20   अंक : 9

संपादक
अनिल तिवारी

प्रबंध संपादक
वर्षा सिंह

कार्यकारी संपादक
राजेश डोबरियाल

उप संपादक
संध्या शुक्ला

विशेष संवाददाता
नचिकेता पटनायक
संजय कुमार

फोटो - संपादक
चमन गौतम

साज-सज्जा
राधेश्याम

कानूनी सलाहकार
कुंअर जयसिंह

(उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं)

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक शोभा तिवारी द्वारा एबीएम ग्राफिक्स, सी-440, सेक्टर-10, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, (उत्तर प्रदेश) व डीटी प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग, माजरा, देहरादून से मुद्रित तथा 93ए, अरावली अपार्टमेंट, सेक्टर-52, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित।

कार्यालय: सी-288, सेक्टर-10 नोएडा, गौमतबुद्धनगर, यू.पी.
फोन: 0120-6545602
E-mail : kalarvms@rediffmail.com
Website: www.jankalrav.com

सौजन्य: सहयोग
707, पत्रकार विहार, इंदिरापुरम, गाजियाबाद

अनुक्रम

06 सताने लगी है गर्मी, डरा रही है विश्व बैंक की रिपोर्ट

08 जस की तस है, कामगारों की दशा

10 खिलेगा कमल या जोड़ा फूल का जलवा रहेगा बरकरार?

14 यह तो होना ही था!

16 जरूरी नागरिक चेतना के लिए कब होगा बदलाव

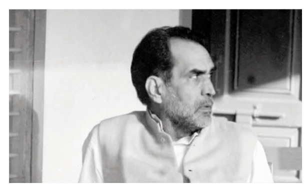

22 तय था चिरागां हर शहर के लिए

28 नाम : आजाद, पिता: स्वाधीनता, माता : भारत माता

30 तकनीक ने हमें दिया है बहुत कुछ, लेकिन धीरे-धीरे छीन रही है सब कुछ

32 शेर और शहर

18 घटता खजाना देख सोना की खरीदारी पर संयम की अपील

20 अच्छे दिन का तो पता नहीं पर महंगे दिन आ गए

34 जीत का फार्मूला बन गई है मुफ्त की रेवड़ी?

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 4

प्रकृति से सामंजस्य जरूरी

अनिल तिवारी

"जेठ के आतप दारूण से, तपके जगती तल जावे जला। नभ मंडल छाया मरुस्थल सा, दल बांध के अंधड़ आवे चला। जलहीन जलाशय व्याकुल है, पशु पक्षी प्रचंड है भानुकला। किसी कानन-कुंज के धाम में प्यारे, चलो विश्राम करें तो भला।।

जेठ के महीने की गर्मी को लेकर श्रीधर पाठक द्वारा रचित यह छंद यूपी बोर्ड के हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में बहुत पहले से शामिल है। यानी भीषण गर्मी का एहसास हमारी स्मृति में सदैव से शामिल रहा है। मुझे याद है बचपन में बुढ़िया दादी हम सभी छोटे हम उम्र के बच्चों को जेठ महीने में जब नौतपा शुरू होता था तो दिन भर के लिए बैला वाले घर (जहां गाय भैंस बांधे बैल जाते थे) में बंद कर दिया जाता था। समय-समय पर सभी को वहीं खिलाया पिलाया भी जाता था। सभी बच्चे मिलजुल कर खाते पीते आपस में खेलते कूदते रहते थे। हालांकि वह कई बार कैद जैसा लगता था, और हम में से कोई ना कोई मौका देखकर भाग निकलने की भी कोशिश करता था। पकड़े जाने पर डांट पड़ती थी, पिटाई भी होती थी, लेकिन मिट्टी का वह घर इतना ठंडा रहता था कि गर्मी का वहां नामोनिशान नहीं होता था।

कहने का आशय यह है कि गर्मी हमारे लिए कोई नई परिघटना नहीं है, यह पहले भी पड़ती थी, लेकिन तब हमारे पूर्वजों ने गर्मी से बचने के लिए तमाम देसी इंतजाम किया था। पेड़-पौधों, बाग-बगीचों की भरमार थी। मौसम के अनुकूल घर थे। अब विकास के नाम पर हमने धीरे-धीरे पुराने से पल्ला झाड़ लिया है। पेड़ पौधे काट डाले हैं। गांवों में भी मोटी दीवार के मिट्टी के घरों की जगह अब ईंट पत्थर के घर बन गए हैं। प्रायः घरों में एसी कूलर लगे हैं। लेकिन जब तापमान चढ़ने लगता है तो एक सीमा के बाद ये यंत्र हाथ खड़ा कर देते हैं। बढ़ते हीटवेव का मुकाबला करने मैं यह सक्षम साबित नहीं होते।

गांव के लोग पसीना पोंछते, गर्मी को कोसते हुए जैसे तैसे दिन काट लेते हैं लेकिन शहरी लोगों की जान और अधिक सांसत में पड़ती है।

हीटवेव का सबसे बड़ा कारण केवल बढ़ता तापमान नहीं, बल्कि वह विकास मॉडल है जिसने धरती की प्राकृतिक ढाल को कमजोर कर दिया। जंगल सदियों से पृथ्वी के प्राकृतिक एयर कंडीशनर रहे हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, वाष्पोत्सर्जन द्वारा वातावरण को शीतल रखते हैं और वर्षा चक्र को संतुलित बनाए रखते हैं। लेकिन विडंबना है कि विकास के नाम पर जंगलों का तेजी से विनाश हुआ। हर वर्ष लाखों हेक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हो रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि स्थानीय स्तर पर तापमान बढ़ा, नमी कम हुई, वर्षा चक्र प्रभावित हुआ और गर्म हवाओं की अवधि लंबी होती गई। आज शहर "कंक्रीट के जंगल" बन चुके हैं। महानगरों में हरित क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं और उनकी जगह सीमेंट, डामर और शीशे की ऊंची इमारतें ले रही हैं। इससे "अर्बन हीट आइलैंड" प्रभाव तेजी से बढ़ा है। शहर अब आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक गर्म हो चुके हैं। कंक्रीट दिनभर सूर्य की ऊष्मा को सोखता है और रात में धीरे-धीरे छोड़ता है। परिणामस्वरूप रातें भी गर्म होती जा रही हैं और शरीर को राहत नहीं मिल पाती।

> जंगल सदियों से पृथ्वी के प्राकृतिक एयर कंडीशनर रहे हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, वाष्पोत्सर्जन द्वारा वातावरण को शीतल रखते हैं और वर्षा चक्र को संतुलित बनाए रखते हैं।

दिल्ली, मुंबई, जयपुर और लखनऊ जैसे शहरों में रात का तापमान पहले की तुलना में लगातार

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 5

बढ़ रहा है। गरीब बस्तियों में स्थिति और भी गंभीर है। वहां न हरित क्षेत्र हैं, न पर्याप्त जल आपूर्ति, न शीतलन के साधन। टीन की छतों वाले घर दिन में भट्ठी बन जाते हैं। गर्मी की मार सामाजिक असमानता को और गहरा करती है। अमीर वर्ग एयर कंडीशनर और बंद कमरों में राहत खोज लेता है, लेकिन मजदूर, रिक्शाचालक, रेहड़ी वाले और निर्माण कार्य में लगे श्रमिक खुले आसमान के नीचे झुलसते रहते हैं। विडंबना यह भी है कि गर्मी से राहत का सबसे लोकप्रिय साधन एयर कंडीशनर स्वयं संकट को बढ़ाने वाला कारक बनता जा रहा है। एक एयर कंडीशनर कमरे को ठंडा करता है, लेकिन बाहर उतनी ही गर्म हवा छोड़ता है। इसके साथ ही बिजली की खपत बढ़ती है, जिसका बड़ा हिस्सा अभी भी कोयला आधारित ऊर्जा से आता है। रेफ्रिजरेंट गैसें अतिरिक्त ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करती हैं। इस प्रकार एक दुष्चक्र निर्मित हो गया है-गर्मी बढ़ती है, एसी बढ़ते हैं, उत्सर्जन बढ़ता है और फिर गर्मी और बढ़ जाती है।

बढ़ता तापमान कृषि, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक असर डाल रहा है। बढ़ती गर्मी और अनिश्चित मौसम के कारण गेहूं, धान और अन्य फसलों की उत्पादकता प्रभावित हो रही है। गर्म हवाएं पौधों की वृद्धि रोकती हैं, जल स्रोतों को सुखाती हैं और मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित करती हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में खाद्य संकट भी गहरा सकता है। स्वास्थ्य क्षेत्र पर भी इसका गंभीर प्रभाव दिख रहा है। लू लगना, निर्जलीकरण, हीट स्ट्रोक, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। सबसे अधिक खतरा बुजुर्गों, बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बाहर काम करने वाले श्रमिकों को है।

गर्मी का यह संकट सामाजिक और मानवीय संकट भी बन सकता है। जल स्रोतों के सूखने, कृषि संकट और जीवन परिस्थितियों के बिगड़ने से बड़े पैमाने पर पलायन बढ़ सकता है। जैव विविधता पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियां अपने प्राकृतिक आवास खो रही हैं। हजारों प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। ऐसी स्थिति में सरकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। केवल रेड अलर्ट और ऑरेंज अलर्ट जारी करना पर्याप्त नहीं है। हीटवेव को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार करते हुए दीर्घकालिक नीतियां बनानी होंगी।

सबसे पहले शहरों में हीट एक्शन प्लान को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। प्रत्येक शहर में हरित क्षेत्र बढ़ाने, जल संरक्षण, छायादार मार्ग, सार्वजनिक प्याऊ और शीतलन केंद्रों की व्यवस्था आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों के समय निर्धारण में क्षेत्रीय तापमान को ध्यान में रखा जाना चाहिए। तीखी दोपहर में श्रमिकों के लिए कार्यावधि सीमित की जाए और उनके लिए विश्राम तथा पेयजल की व्यवस्था अनिवार्य हो।

वर्ष 2026 की यह झुलसाती गर्मी हमें चेतावनी दे रही है कि यदि हमने अभी भी प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित नहीं किया तो आने वाले वर्षों में स्थिति और विकराल होगी। पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा, जैव विविधता नष्ट होगी, खाद्य संकट गहराएगा और मानव जीवन अधिक कठिन हो जाएगा। यह समय प्रकृति से संघर्ष का नहीं, उसके साथ सामंजस्य का है। हमें विकास की ऐसी दिशा चुननी होगी जिसमें पर्यावरण, मानव जीवन और भविष्य सुरक्षित रह सके। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब सूरज की तपिश केवल असुविधा नहीं, अस्तित्व का संकट बन जाएगी।

वर्ष 2026 की यह झुलसाती गर्मी हमें चेतावनी दे रही है कि यदि हमने अभी भी प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित नहीं किया तो आने वाले वर्षों में स्थिति और विकराल होगी। पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा, जैव विविधता नष्ट होगी, खाद्य संकट गहराएगा और मानव जीवन अधिक कठिन हो जाएगा। यह समय प्रकृति से संघर्ष का नहीं, उसके साथ सामंजस्य का है। हमें विकास की ऐसी दिशा चुननी होगी जिसमें पर्यावरण, मानव जीवन और भविष्य सुरक्षित रह सके।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 6

सताने लगी है गर्मी, डरा रही है विश्व बैंक की रिपोर्ट

धीरेंद्र जयहिंद

प्रचंड गर्मी का प्रकोप बढ़ रहा है। राजधानी दिल्ली सहित देश के कई हिस्सों में बढ़ते तापमान से लोग हलकान हैं। रोजमर्रा की जरूरतों से चिलचिलाती धूप में निकालने के कारण बीमारों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इस बीच विश्व बैंक की ताजी रिपोर्ट में बढ़ती गर्मी को लेकर एक डरावने आंकड़े सामने आए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2050 तक शहरों में रहने वाले गरीब लोगों की संख्या जो खतरनाक गर्मी झेलने के लिए बाध्य है वह 700 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। यानी कि आज जितने गरीब गर्मी से प्रभावित हैं उसे 7 गुना ज्यादा आबादी गर्मी की आग में जलने के लिए मजबूर होगी।

देश की राजधानी दिल्ली का तापमान आज 43-44 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है।इसका सीधा असर काम धंधे के लिए घर से बाहर निकलने वाले कामगारों, स्कूल कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों आदि पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 7

है कि वैश्विक दक्षिण के अधिकांश शहरों में अर्बन हीट आईलैंड के तापमान से 10 डिग्री तक ऊपर चली गई है। इससे बेघर लाखों लोगों के लिए गर्मी मुसीबत का सबब बन रही है वही अर्थव्यवस्था के भी बड़े नुकसान की आशंका जताई जा रही है। पशु पक्षी भी बेहाल है।

ऐसा नहीं है कि पृथ्वी नामक ग्रह पर पहले गर्मी नहीं थी। गर्मी पहले भी थी लेकिन तब का समाज प्राकृतिक रूप से गर्मी से बचाव का माकूल इंतजाम करता रहा था। गर्मी से बचाव की दृष्टि से लंबी आयु वाले पेड़ पौधों के बगीचे लगाए जाते थे। पोखर, तालाब, ताल तलैया, कुएं, बावड़ियों का निर्माण प्राथमिकता में था। हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्रीधर पाठक को जब तेज गर्मी ने व्याकुल किया तो राहत के लिए उन्होंने भी बगीचे की राह ली थी।

जेठ के आतप दारूण से, तपके जगती तल जावे जला। नभमंडल छाया मरुस्थल सा दल बांध के अंधड़ आवे चला।

जल हीन जलाशय व्याकुल है, पशु पक्षी प्रचंड है भानु कला। किसी कानन कुंज के धाम में प्यारे, चलो विश्राम करो तो भला।।

अब शहर बगीचा विहीन हो चुके हैं। आबादी बढ़ने के साथ गांव में भी पेड़ों की संख्या लगातार घटते हुए अब ना के बराबर रह गई है।

गांवों में नए पेड़ लग नहीं रहे हैं और पुराने बच्चे खुचे पेड़ लगातार कट रहे हैं। ऐसे में गर्मी से पगलाए पथिक को कानन कुंज की तो बात छोड़िए तरुवर की छाया भी सहज नसीब नहीं है।

अगर आपको याद हो तो वर्ष 2023 में बनारस में राह चलते लोगों के अचानक गिरकर मर जाने की खबरें सुर्खियां बनी थी। तब कहा गया कि करोना महामारी के साइड इफेक्ट के कारण लोगों की मौतें हो रही है। जिस दिन सबसे ज्यादा तेरह मौतें बनारस में दर्ज की गई उस दिन वहां का टेंपरेचर 44 डिग्री था। सभी मरने वालों को अस्पताल ले जाया गया किंतु उन्हें इलाज की जरूरत नहीं पड़ी। यानी गर्मी ने शरीर को संभलने, लड़ने बचाव करने का कोई मौका नहीं दिया। विश्व बैंक की रिपोर्ट पर गौर करें तो आज शहरों के साथ-साथ देश के अधिकांश गांवों में गर्मी एक साइलेंट किलर की तरह बढ़ रही है। खासकर वैश्विक दक्षिण के गरीब शहरों में यह समस्या बहुत भयानक गति से पैर पसार रही है। लगातार बढ़ते शहर कस्बा, कम संसाधन, ग्लोबल वार्मिंग, आदि के कारण बढ़ती गर्मी लोगों की जिंदगी में जहर घोल रही है। यह गर्मी अब सिर्फ गर्मी नहीं रही बल्कि बेरोजगारी भुखमरी के साथ-साथ असमय मौत का भी कारण बन रही है।

विश्व बैंक की रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है की गर्मी पर काबू करने के लिए शीघ्र कदम नहीं उठाया जाता है तो परिणाम भयानक हो सकते हैं। काम धंधा ठप हो सकता है, स्कूल कॉलेज बंद पड़ जाएंगे, अस्पतालों में मरीजों की लाइन लगेगी, बिजली की मांग इतनी बढ़ेगी की बिजली का संकट गहरा जाएगा, प्रदूषण बढ़ेगा, गरीबी और असमानता बढ़ेगी, लोग शहर छोड़ कर बदहवास भागने लगेंगे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि गर्मी अब सिर्फ मौसमी परेशानी नहीं है। यह शहरों की पूरी व्यवस्था को चूर-चूर कर सकती है। अगर शहर अभी से तैयार नहीं हुए तो लाखों बेघर तो होंगे ही, बड़ी संख्या में लोग भूखे मरेंगे और गर्मी के वजह से होने वाली मौतें आम हो जाएगी।

विश्व बैंक ने गर्मी की इस डरावनी स्थिति से निपटने के लिए यूएन हैबिटेट और यूएनईपी के साथ मिलकर हिट मैनेजमेंट के लिए एक पुस्तिका तैयार की है जिसमें बताया गया है कि गर्मी के खतरे को कैसे मापा जाए? कैसे तैयार रहें? क्या-क्या समाधान अपनाया जाय? पुस्तिका में कहा गया है कि शेरों को अब गर्मी के मामले को हल्के में नहीं लेना चाहिए। इसे मौसमी समस्या मानकर नजरअंदाज करने से पूरा शहर तहस-नस हो सकता है। वैज्ञानिकों ने भी चेतावनी दे रखी है कि गर्मी रोजमर्रा की जिंदगी को बदल रही है अगर शहर अभी सक्रिय नहीं हुई तो 2050 तक गर्मी लाखों गरीबों की जिंदगी छीन लेगी। अब समय है कि सरकारी शहर प्रशासन और लोग मिलजुल कर संकट से लड़े वरना आने वाले वर्षों में शहर आज के समंदर में तब्दील हो जाएंगे जहां सांस लेना भी मुश्किल होगा। कस्बा और गांव भी इससे अछूते नहीं रह गए हैं। जिस रफ्तार से परिवार बढ़ रहे हैं, बंट रहे हैं और पेड़ों की संख्या घट रही है, गर्मी के कारण जीवन वहां भी पहले की तुलना में कठिनतर होता जा रहा है।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 8

जस की तस है, कामगारों की दशा

नचिकेता पटनायक

पिछले 140 वर्षों में दुनिया के साथ भारत में भी संगठित क्षेत्र के मजदूरों की सेवा शर्तों में काफी हद तक सुधार हुआ है। इससे उनकी दशा बदली है, लेकिन देश में मजदूरों के बड़े क्षेत्र संगठित क्षेत्र के कामगारों की स्थिति निरंतर और अधिक बदतर तथा श्रम-साध्य होती गई है। वैश्वीकरण के बाद से बाजारवाद और पूंजीवाद पर लहालोट सरकारों ने तो आंखें मूंद ही ली हैं, राजनीतिक दलों और बहुतायत मजदूर संगठनों ने भी मुंह फेर लिया है। खासकर भारत में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कामगारों का कोई माई-बाप नहीं है। असंगठित क्षेत्र के मजदूर जांगर तोड़ मेहनत कर किसी तरह दो जून की रोटी जुटाते हैं, लेकिन उनकी अन्य आवश्यक बुनियादी ज़रूरतें भाग्य और भगवान के भरोसे ही है। जब कभी देश में कोई समस्या खड़ी होती है तब सबसे ज्यादा प्रभावित यही वर्ग होता है। करोना महामारी के दौरान करोड़ों मजदूर सिर पर गठरी लादे हजारों किलोमीटर पैदल चलने को मजबूर हुए थे। उस दौरान सैकड़ो मजदूरों की असमय मौत हो गई थी। अभी हाल में गैस की किल्लत हुई तो इसका खामियाजा भी इसी वर्ग को सबसे अधिक उठाना पड़ा। हजारों की संख्या में मजदूर अपना काम का छोड़कर पलायन के लिए मजबूर हुए।

वर्ष 1886 में मजदूरों ने पहली दफा शिकागो शहर में रैली निकाली थी तो उनकी एक ही मांग थी कि हमारे काम के घंटे 8 होने चाहिए। पुलिस ने उनके ऊपर गोलियां चलाई जिसमें सैकड़ो मजदूर शहीद हुए लेकिन अंततः उनकी बात मान ली गई और काम के घंटे 8 तय किए गए। उसी की याद से हम 'मई दिवस' मनाते आ रहे हैं। संगठित क्षेत्र के मजदूरों के जीवन स्तर में कुछ सुधार हुआ लेकिन कुल लगभग 50 करोड़ मज़दूरों में 95% मजदूर असंगठित क्षेत्र से हैं जिनके लिए आज भी ना तो कार्य के घंटे निर्धारित हैं और ना ही कोई वेतन आयोग है। न्यूनतम मजदूरी कानून का झुनझुना केवल कागजों पर ही सीमित है। इनके लिए ना काम की निश्चितता है और ना ही भविष्य निधि या पेंशन की व्यवस्था। असंगठित क्षेत्र के मजदूर के लिए न हीं कोई नियम कानून है, न हीं सामाजिक सुरक्षा और ना ही काम करने का सही माहौल। पूंजीवाद के इस दौर में मजदूर के खिलाफ समूचे देश में शोषण का साम्राज्य कायम है। आजादी के 78 साल बाद भी उनकी दशा में कोई सुधार नहीं हो पाया है इनके लिए आजादी मिलने और लोकतंत्र का राज कायम होने का कोई मतलब नहीं है। वह आज भी उतने ही शोषित हैं जितना गुलामी के दौरान थे।

मजदूरों के लिए एक मई का दिन त्योहार माना जाता है, क्योंकि इस दिन सारी दुनिया के मजदूरों के लिए न्याय और सम्मान के जीवन की जरूरत को रेखांकित किया गया है। यह दिन सरकारों, राजनीतिक दलों और सभी क्षेत्र के मजदूर आंदोलनों की आत्म समीक्षा का भी दिन होता है। यह तारीख श्रमजीवी वर्ग और बाकी समाज के परस्पर संबंधों के मूल्यांकन का भी दिन है। आइए,01 मई 2026 को इससे जुड़े कुछ प्रश्नों पर

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 9

विचार करते हैं।

पहला प्रश्न यही है कि हमारे देश और समकालीन दुनिया में मजदूरों की क्या स्थिति है? उत्तर बहुत ही स्पष्ट है कि यह दौर पूंजी की प्रमुखता का दौर है। यह ऐसे श्रम का दौर है जिसे हम कुशल श्रम, सफेदपोश श्रम, और सेवा क्षेत्र के श्रम की प्रधानता को ज्यादा महत्व देने वाला दौर कह सकते हैं। यानी खेतों में काम करने वाले और उत्पादन प्रक्रिया के कारखाना पक्ष को संभालने वाले श्रमजीवी की तुलना में सूचना तकनीक, स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्तीय सेवाएं, पर्यटन और मनोरंजन जैसे सेवा क्षेत्र से जुड़े श्रमिकों का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। कारखाना और खेतिहर मजदूर के बारे में अब कोई गंभीरता से बात भी नहीं करता।

दूसरा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि आज संगठित मजदूर आंदोलन की दिशा क्या है? आज से 50 साल पहले इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट था। तब सारी दुनिया के मजदूर आंदोलन जनतंत्र को ज्यादा सार्थक बनाने के लिए, आर्थिक जनतंत्र के साथ राज्य सत्ता को लोक हितकारी बनाने के लिए, कल्याणकारी लोकतंत्र से लेकर समाजवादी लोकतंत्र के लिए एक साथ प्रयास कर रहे थे और कहीं-कहीं संघर्ष भी चलता रहता था। लेकिन पिछले 25 वर्षों में संगठित मजदूर आंदोलन की दिशा तेजी से बदली है। अब व्यवस्था परिवर्तन की बजाय व्यवस्था में उचित हिस्सेदारी ही मजदूर संगठनों का लगता है लक्ष्य बन चुका है। आज 'दुनिया के मजदूरों एक हो और पूंजीवाद में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करो' यही एक साझा नारा नजर आता है। पहले का नारा दूसरा था। क्रांतिकारी चिंतक कार्ल मार्क्स ने अपने मशहूर घोषणा पत्र में स्पष्ट किया था कि 'दुनिया के मजदूरों एक हो, आप इस व्यवस्था में कुछ हासिल नहीं कर सकते इसलिए इस व्यवस्था को तोड़ो, इसे बदलो और इसमें मजदूरों के खोने के लिए कुछ नहीं सिवाय उनकी जंजीरों के'।

एक तीसरा सवाल यह भी है कि आज के दौर में उत्पादन प्रक्रिया में मजदूरों की भूमिका क्या है? अब कंप्यूटरीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बहुदेशीकरण के कारण समूची उत्पादन प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है जिसके चलते एक तरफ मजदूर का श्रम मशीन की क्षमता के आगे पराजित सा खड़ा हो रहा है और दूसरी तरफ मजदूरों के संगठन का राष्ट्रीय दायरा अंतरराष्ट्रीयता के कारण श्रम प्रक्रिया के अंतरराष्ट्रीयकरण के प्रभाव में लगभग अप्रासंगिक होता जा रहा है। इसलिए आज हम देश के पैमाने पर मजदूरों की तरफ से पहल की क्षमता को लगातार घटता हुआ देख रहे हैं और मशीन के बढ़ते दबाव के कारण अब मजदूर संगठनों में भी वह आत्मविश्वास नहीं दिखाई देता जो कंप्यूटर के दौर के पहले के मजदूर आंदोलनों में था।

ऐसे में एक सवाल यह भी है कि 01 मई की तारीख का भविष्य क्या है? मुझे लगता है कि मजदूर आंदोलन जनसाधारण के सम्मानजनक जीवन की तलाश के लिए चल रहे आंदोलनों से जुड़ता है तो यह सभी जन आंदोलनों का एक बुनियादी तत्व बनकर अन्य आंदोलनों को भी बल दे सकेगा। अगर मजदूर आंदोलन अंतर्मुखी होता चला जाएगा, अपने कामकाज की परिस्थितियों अपनी तनख्वाहों को बाकी समाज के सवाल से ज्यादा महत्व देगा और अपने को बाकी समाज के सरोकारों से काट लेगा तो यह आत्महत्या का रास्ता ही होगा। क्योंकि आज वह आंदोलन जो स्त्री प्रश्न पर, सामाजिक न्याय के प्रश्न पर, नागरिकों के मानव अधिकार के प्रश्न पर, पर्यावरण रक्षा के प्रश्न पर चुप रहेगा और जब कभी अपने आंदोलन के लिए ललकार लगाएगा तो बाकी समाज भी प्रतिध्वनि के लिए प्रस्तुत नहीं होगा। ऐसे में सभी मजदूर संगठनों को वर्तमान के सवाल से खुद को जोड़ते हुए आत्मा समीक्षा के लिए तैयार होना होगा तथा विभिन्न विषयों पर आंदोलित लोगों को, संगठनों और समूहों को साथ लेकर चलने की जरूरत को प्राथमिकता से शामिल करना होगा। और इस संदर्भ में 01 मई 2026 की तारीख आंदोलन के लिए आत्म समीक्षा की तिथि हो सकती है। क्योंकि आज आत्मविश्वासहीनता हमारे मजदूर आंदोलन की सबसे बड़ी समस्या है।

इस आत्मविश्वास को वापस पाने के लिए व्यापक सामाजिक सरोकारों से जुड़ने का उपाय ढूंढना ही होगा। पहले समाजवाद, साम्यवाद और राष्ट्रवाद जैसे विचार दर्शन इस आत्मविश्वास का मार्ग प्रशस्त करते थे। क्योंकि वह बाकी समाज के सरोकारों से मजदूर आंदोलन को जोड़ते थे। लेकिन आज यह सभी वाद अपनी सीमा परिधि में सिमट कर खुद आभाविहीन हो चुके हैं। इन सब के ऊपर पूंजीवाद और बाजार बाद हावी हो गया है। अमेरिका, रूस, चीन, इंग्लैंड, भारत, सब की गति एक जैसी है। इसलिए भी यह समय हर तरह से आत्म समीक्षा का समय है और मजदूर आंदोलन को अपने इतिहास और अपने भविष्य को जोड़ने वाला वर्तमान बनाने के लिए नई सक्रियता के साथ सजग प्रयास के लिए प्रस्तुत करना होगा।

पश्चिम बंगाल चुनावः किधर ठहरेगी की नाव!

खिलेगा कमल या जोड़ा फूल का जलवा रहेगा बरकरार?

■ कलरव टीम

पांच राज्यों पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल और पुडुचेरी के चुनावी दंगल में हार जीत का नतीजा कल (4 मई 2026) आएगा। परिणाम आने के साथ ही पता चलेगा कि इन राज्यों में किसकी सरकार बनेगी। पांच राज्यों में दो राज्य पूर्व के हैं तो तीन दक्षिण के। बंगाल और असम के चुनाव परिणाम का असर अगले साल होने वाले देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के चुनाव पर भी पड़ेगा। एग्जिट पोल के अनुमान प्रसारित होने के बाद से ही परिणाम को लेकर इन राज्यों मे राजनीतिक गतिविधियों में रवानी आ गई है, लेकिन सर्वाधिक गहमागहमी पश्चिम बंगाल को लेकर है। करो या मरो के अनुशासन से जुटी बीजेपी बंगाल का किला फतह कर राज्य में कमल खिला सकेगी अथवा मां, माटी, मानुष की पैरोकार वर्तमान मुख्यमंत्री की कूंची से निर्मित जोड़ा फूल की धाक, धमक और गमक आगे भी बरकरार रहेगी?

आज की रात इन दोनों दलों पर भारी है। राजनीतिक गुणा गणित अपने पक्ष में बताते हुए भाजपा के दिग्गज परिणाम के बाद सरकार बनाने का दावा कर रहे हैं वहीं टीएमसी नेत्री ने अपने कार्यकर्ताओं को रतजगा करने और परिणाम घोषित होने तक चौकस रहने का निर्देश दिया है।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 11

आंकड़ों पर गौर करें तो पश्चिम बंगाल विधानसभा मे कुल 294 सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए जादुई आंकड़ा 148 का है। वर्ष 2016 के चुनाव में तृणमूल कांग्रेस को 211 सीट मिली थी जबकि भाजपा को मात्र तीन सीट पर संतोष करना पड़ा था। कांग्रेस को 44 सीट, वामदलों को 32 सीट तथा अन्य के खाते में चार सीटें थी। वर्ष 2021 के चुनाव में राज्य में कांग्रेस और वाम दलों का खाता भी नहीं खुला था जबकि अन्य दल केवल दो सीट पर सिमट गए थे। तब भारतीय जनता पार्टी तीन सीटों से बढ़कर 77 सीट जीतने में कामयाब हुई थी। माना गया कि कांग्रेस और वामदलों की हार का सीधा फायदा भाजपा को मिला था। तब तृणमूल कांग्रेस 215 सीट जीतकर दो तिहाई से अधिक बहुमत की सरकार बनाने में कामयाब हुई थी। मौजूदा चुनाव में कांग्रेस और वामदलों का चुनावी तालमेल हुआ है। भाजपा को उम्मीद थी कि वर्ष 2016 की तरह बम कांग्रेस गठबंधन मजबूती से चुनाव लड़ेगा तो प्रकारांतर से उसका फायदा पार्टी को मिलेगा लेकिन जमीनी हकीकत बता रही है कि चुनाव में बीजेपी और तृणमूल के बीच कड़ा और कांटे का संघर्ष है।

हालांकि चुनाव पांच राज्यों में हुए हैं लेकिन ज़्यादातर राजनीतिक पंडितों का ध्यान पश्चिम बंगाल के चुनावी नतीजों

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्यों पश्चिम बंगाल का चुनाव इतना महत्वपूर्ण बन गया है?

इसको अलग-अलग नज़रिए से देखना होगा। सबसे पहले यही देखते हैं कि बीजेपी के लिए यह राज्य इतना अहम क्यों है? क्योंकि श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जो जनसंघ के संस्थापक थे, पश्चिम बंगाल उनका गृह राज्य है। यही वजह है कि 1950 से बीजेपी का लगातार प्रयास रहा है कि वह किसी तरह से पश्चिम बंगाल में कामयाब हों, वहां अपनी सरकार बना सके। हालांकि अभी तक वह सफल नहीं हुए हैं। इस बार के चुनाव में बीजेपी की ओर से हर संभव कोशिश हुई। साधन, प्रचार और संसाधनों की कोई कमी नहीं रखी गई। सरकारी एजेंसियों के दुरुपयोग तक के आरोप लगे हैं और राज्य में केंद्रीय बलों की तैनाती भी हुई है। प्रधानमंत्री के अनगिनत कार्यक्रमों के साथ-साथ देश के गृह मंत्री का लगातार कैंप करना भी चर्चा में रहा है।

इसके अलावा दूसरा जो अहम कारण है, वह यह है कि यह राज्य बीजेपी के रणनीतिकारों के लिए एक बड़ा टेस्ट केस भी है कि वह कितने हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण कर सकते हैं।

क्योंकि ध्यान रहे कि पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य है जहां अलग-अलग आंकड़ों के मुताबिक 25 से 30 प्रतिशत तक मुस्लिम मतदाता हैं। ऐसे में दूसरी तरफ़ का ध्रुवीकरण काफ़ी मजबूत होना चाहिए। हालांकि अनुमानों में यह भी कहा गया है कि इस बार कुछ मुस्लिम मतदाता भी बीजेपी को समर्थन दिए हैं लेकिन आम धारणा है कि बीजेपी को मुस्लिम वोट बहुत कम या नहीं के बराबर ही मिले होंगे।

बीजेपी और विपक्ष के नज़रिए से एक और अहम बात यह है कि,

राजनीतिक हलकों में पश्चिम बंगाल को एक लास्ट फ्रंटियर की तरह से देखा जा रहा है क्योंकि उत्तर में, केंद्रीय भारत में, पूर्वी भारत में ज़्यादातर जगह बीजेपी अपनी जीत का झंडा फहरा चुकी है।

बंगाल अभी तक उससे बचा हुआ है। बीजेपी अब तक यहां जीतने में कामयाब नहीं हुई है। इसलिए यह चुनाव बीजेपी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और विपक्ष के लिए इसलिए कि बीजेपी के बढ़ते हुए प्रभाव को, उसके एकछत्र राज को रोकना है, तो पश्चिम बंगाल में टीएमसी को बने रहना होगा। यह उसके लिए तो बहुत महत्वपूर्ण है ही, समूचे विपक्ष के लिए भी अहम है। तो दोनों तरफ़ से मुक़ाबला इसलिए बहुत अहम हो जाता है।

इस चुनाव में एक अहम मुद्दा एसआईआर का भी रहा है, वोटर लिस्ट में जो स्पेशल इंटेंसिव रिवीज़न हुआ है, वह राज्य के चुनाव में एक ऐसा विषय बना हुआ है, जिसकी वजह से लोगों का पारा भी काफ़ी चढ़ा हुआ है, तनाव भी है और यह एक संवेदनशील मुद्दा भी है।

बड़ी संख्या में लोगों के वोट कटे हैं और उस बड़ी संख्या में जो वोट कटे हैं उसमें भी बड़ी संख्या अल्पसंख्यक यानी मुस्लिम मतदाताओं की है। यह वोट सेंट्रल बंगाल, मुर्शिदाबाद, मालदा और इनके आस-पास के इलाकों में कटे हैं। पश्चिम बंगाल में एसआईआर की जमीनी सच्चाई जानने के लिए गए कई लोगों का मानना है कि गड़बड़ी हुई है, ग़लतियां भी हुई हैं। किसी घर में पिता का वोट तो रह गया है, बाकी सदस्यों का नहीं है। कहीं पति का रह गया है, पत्नी और बच्चों का कट गया है। कहीं पत्नी का रह गया है बाकी घर वाले नहीं हैं। बिल्कुल सही हुआ है, इसके तो आसार कम ही नज़र आते हैं।

फिर एक मुद्दा ध्रुवीकरण का है, जो पश्चिम बंगाल की राजनीति की सच्चाई है। इसबार ध्रुवीकरण शहरी इलाकों में काफ़ी है, ख़ासकर उन लोगों में जो मूलतः बंगाली नहीं हैं, चाहे वे मारवाड़ी हैं, चाहे हिन्दी भाषी लोग हैं, जो लंबे समय से बंगाल में रह रहे हैं। वे काफ़ी कुछ बीजेपी का साथ देते हुए दिखे हैं।

शहरों में हिंदू-मुस्लिम की चर्चा ज़्यादा रही, ग्रामीण इलाकों में उसकी बात कम है । लेकिन अच्छी बात यह है कि बात कितनी भी हो, मुद्दा जितना भी अहम हो, चुनावी असर जो भी दिखा हो, लेकिन अपेक्षाकृत पूरे बंगाल में कोई सांप्रदायिक तनाव की झलक नहीं दिखी । कई जगह लोग काफ़ी अमन-चैन से रह रहे थे। मुस्लिम इलाके अलग हैं, हिंदू इलाके अलग हैं। कमोबेश अब पूरे देश की जो कहानी है वही पश्चिम बंगाल की भी है।

चुनाव के ज़मीनी स्थिति की बात करें तो एक बात जो समझ में आती है, वह यह है कि ममता का शासन और ममता की सरकार ख़ासी अलोकप्रिय है। उसने कुछ ख़ास अच्छा काम नहीं किया है, विकास के नज़रिए से हम देखें तो पश्चिम बंगाल की विकास दर देश में सबसे धीमी है। बातचीत में वहां के लोग कल कारखानों के बंद होने से रोजगार की कमी का जिक्र बेधड़क करते हैं। यानी जहां दूसरी जगह वृद्धि दर बढ़ रही है, वहां पश्चिम बंगाल में यह ठिठकी हुई है।

लेकिन सवाल है कि क्या केवल विकास को आगे कर कोई चुनाव जीत सकता है? अनुभव तो यही कहता है कि दरअसल यह कोई सर्वमान्य फार्मूला नहीं है। अब तक तो यह आधे आधे का मामला ही रहा है। लगभग 50 प्रतिशत मामले ऐसे होते हैं जब विकास करने के बाद भी लोग जीत नहीं पाते और 50 प्रतिशत ऐसे मामले होते हैं जहां विकास कम होता है लेकिन फिर भी दोबारा जीत जाते हैं।

इसका मतलब है कि चुनावी राजनीति में दूसरी चीजें ज़्यादा भारी पड़ती हैं। पिछले कुछ वर्षों से चुनावों में महिला मतदाता अहम भूमिका निभा रही हैं। बिहार में, मध्य प्रदेश में देखा गया कि महिलाएं मदद करने वालों को वोट करती हैं और उनके बीच में बीजेपी की पैठ बेहतर हुई है। नीतीश कुमार ने बिहार में शराबबंदी की, वह चुनाव जीते। इस बार उनकी एक प्रत्यक्ष नगद लाभ योजना थी, उसकी वजह से जीते।

बंगाल में ममता बनर्जी ने एक लक्ष्मी भंडार योजना चलाई हुई है जिसके तहत हर महीने पन्द्रह सौ रुपये महिलाओं के ख़ाते में भेजे जाते हैं अब उसका कितना असर पड़ेगा?

बीजेपी ने वादा किया है कि अगर उनकी सरकार बनी तो वह तीन हज़ार रुपये देंगे। यह देखना भी दिलचस्प होगा कि लोग जो मिल रहा है उस पर ज़्यादा भरोसा करेंगे कि जो मिलने का आश्वासन दिया गया है उस पर ज़्यादा भरोसा करेंगे।

लेकिन कुल मिलाकर, अगर ममता बनर्जी या टीएमसी जीतती है तो वह इसलिए नहीं जीतेंगे कि उन्होंने बहुत अच्छा शासन दिया है, बहुत अच्छी गवर्नेंस है उनकी। वह इसलिए जीतेंगे कि बीजेपी को अब भी बंगाल में स्वीकार्यता नहीं मिल पाई है।

ख़ासकर वे लोग जो मूलतः बांग्ला हैं- मतलब जो हिंदी भाषी बांग्ला नहीं हैं, जो मारवाड़ी नहीं हैं, जो बाहर से आकर बसे नहीं हैं-

जो मूलतः बांग्ला जनसंख्या है, मतदाता हैं, वह अब भी उस तरह का जुड़ाव महसूस नहीं करते और बीजेपी को एक बाहरी पार्टी की तरह देखते हैं। इसके कारण भी बड़े स्पष्ट हैं। बीजेपी के पास ममता के मुकाबले कोई बड़ा चेहरा नहीं है। राज्य में चुनाव प्रचार के लिए जो बड़े-बड़े नेता आते हैं वह भी हिंदी में बोलते हैं, बांग्ला नहीं बोल पाते तो वह एक परायापन की दूरी जैसा रहता है।

फिर जो बीजेपी के ख़ास चेहरे हैं, प्रतीक हैं, राम मंदिर है, हिंदुत्व है, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जिसे बीजेपी ने परिभाषित किया है उसके साथ भी बांग्ला लोग अपने को बहुत ज्यादा जोड़ नहीं पाते। क्योंकि उनके जो प्रतीक हैं वह दुर्गा हैं, शक्ति हैं, काली हैं, शिव हैं. और जो लोकल बांग्ला आइकॉन्स हैं, चाहे वह राममोहन राय हैं, चाहे सुभाष बाबू हैं, चाहे वह कुछ लोगों के लिए अमर्त्य सेन या सत्यजीत रे हैं या बिपिन चंद्र पाल हैं।

एक बड़ी बांग्ला आबादी के साथ बीजेपी उस स्तर पर संवाद स्थापित नहीं कर पाती जैसा की उत्तर भारत के अन्य राज्यों में कर लेती है। हालांकि कोई कोर कसर ना रह जाए इसके लिए भाजपा ने प्रतीकों का टोटका भी आजमाया है। बीजेपी के स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री मोदी ने झालमुरी खाकर, कोलकाता के दूसरे कोने सिक्किम में बच्चों के साथ फुटबॉल का गोल दाग कर जोड़ने का प्रयास किया है।

एक बड़ा फ़ैक्टर इस चुनाव में यह भी है कि बड़ी संख्या में बंगाल से बाहर रहने वाले लोग जो बंगाल लौट के वोट किए हैं, वे किसके पक्ष में खड़े हैं। एसआईआर की वजह से लोगों के जो वोट कटे हैं, उससे पूरे राज्य में ख़ासकर उन लोगों में जो राज्य से बाहर रहते हैं, उनमें संदेश गया है कि अगर उन्होंने वापस जाकर अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग नहीं किया तो अगली बार शायद उनका भी वोटर लिस्ट में नाम नहीं होगा। यह बात सिर्फ़ वोटर लिस्ट की नहीं है। उनको लगता है कि कहीं हमारी नागरिकता पर ही प्रश्नचिह्न नहीं लग जाए। कहीं ऐसा नहीं हो कि जो फ़ायदे मिल रहे हैं भारतीय नागरिक होने की वजह से, चाहे वह फ्री राशन है, चाहे दूसरी सुविधाएं, उन पर कहीं आंच न आ जाए। इसलिए बड़ी संख्या में लोग बाहर से लौट के वोट डाल रहे थे, बंगाल जा रहे थे। यह वोट चुनाव परिणाम में बड़ी भूमिका निभाएगा।

नतीजा जो भी हो, दो-तीन बातें गौर करने की है। देश की राजनीति पर पश्चिम बंगाल के चुनावी परिणाम का बड़ा असर पड़ेगा। एक तो अगर टीएमसी जीतती है तो वह विपक्ष के लिए एक बड़ी उपलब्धि होगी। उनको आगे भी लगेगा कि बीजेपी का मुक़ाबला हो सकता है। लेकिन अगर कोई इसका यह अर्थ निकाले कि टीएमसी का जीतना कोई धर्मनिरपेक्ष ताकतों की जीत है या सांप्रदायिक ताकत की हार है तो वह भी इस चुनावी नतीजे का एक सरलीकरण होगा।

स्मरण रहे कि अगर टीएमसी चुनाव जीतती हैं तो बहुत बड़ी संख्या में मुस्लिम वोट की बुनियाद पर ही जीतेगी , जैसा कि सब लोग कहते हैं, ख़ासकर बीजेपी के नेता कहते नहीं थकते कि टीएमसी का तो वोट 28-30 प्रतिशत से शुरू ही होता है।

लेकिन यहां गौर करने वाली बात यह है कि बंगाल में प्रतिक्रियावादी लामबंदी अभी परवान नहीं चढ़ पा रही है। बीजेपी के जीतने लायक रिवर्स मोबिलाइजेशन नहीं हुआ है। मतलब कि सारे हिंदू एक तरफ़ हो गए, ऐसा नहीं हुआ है। वहां पर मुद्दा बांग्ला पहचान और बांग्ला सब-नेशनलिज्म का भी है। बंगाल के अधिकांश लोग बाहर से आकर रहने वालों को बंगाली नहीं मानते। आज भी यूपी बिहार के लोगों को हिंदुस्तानी कहकर संबोधित करते हैं।

ऐसे में अगर बीजेपी जीतती है

तो एक तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि काफ़ी बड़ी तादाद में और काफ़ी कामयाब तरीके से हिंदू वोट का ध्रुवीकरण करने में बीजेपी कामयाब हो गई है। बीजेपी का परचम तब करीब-करीब पूरे नॉर्थ, वेस्ट, सेंट्रल और ईस्टर्न इंडिया में लहराने लगेगा। एक तरह से इन इलाकों में बीजेपी का एकछत्र राज हो जाएगा।

इसका सीधा असर विपक्ष के मनोबल पर पड़ेगा। विपक्ष हतोत्साहित होंगा। हालांकि कई लोगों का मानना है कि देश के लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक है कि देश का इतना एकतरफ़ा राजनीतिक नक्शा न बने।

बहरहाल जो भी होगा, बहुत ही दिलचस्प होने वाला है। कांटे का मुक़ाबला रहा है और अब तक के आए एग्जिट पोल से भी लग रहा है कि इस चुनाव को समझ पाना इतना आसान नहीं है।

फिर भी सभी लोगों की तरह मुझे भी ऐसा लगता है कि टीएमसी को बढ़त है। अब वह बढ़त कितनी ज्यादा सीटों में तब्दील होती है, कितना अंतर रहेगा बीजेपी और उनके बीच में, यह देखने की बात है।

कुल मिलाकर यह बहुत ही महत्वपूर्ण चुनाव है जिसका देश की

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 14

यह तो होना ही था!

■ कलरव टीम

कह सकते हैं कि पश्चिम बंगाल पर जनादेश तो कबके लिखे हुए थे, इसकी घोषणा भर आज (4 मई 2026) हुई है। खालिस ध्रुवीकरण की बिसात पर लड़े गए पश्चिम बंगाल के चुनावी संग्राम में बड़े ने छोटे को चारों खाने चित्त कर बाजी मार ली है। तृणमूल कांग्रेस वर्ष 2016 की ऐतिहासिक जीत के बाद से ही एक खास वर्ग के पाले में खड़े होकर जिस तरह शासन प्रशासन की धज्जियां उड़ाने लगी थी, पार्टी पर बड़े-बड़े घोटाले और भ्रष्टाचार के आरोप लग रहे थे, आम नागरिकों का जीवन दिन प्रतिदिन कठिन होता जा रहा था, उसे देखते हुए उसके समानांतर बहुसंख्यक आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली भाजपा का न जीतना ही आश्चर्य होता। इन विडंबनात्मक तथ्यों के बावजूद कि केंद्र की कुर्सी पर काबिज भाजपा का ध्रुवीकरण का एजेंडा राज्य के छोटे दल तृणमूल से जरा भी कमतर नहीं है, बल्कि कई अवसरों पर इसका व्यापक विस्तार देखा गया है। इसका मतलब यह नहीं की ध्रुवीकरण एक स्वीकृत संस्कृति की तरह मतदाताओं की मानसिकता में रच बस गया है। पार्टी-पार्टी के ध्रुवीकरण, भ्रष्टाचार, घोटाले आदि में फर्क है लिहाजा एक की बनिस्पत दूसरे का कबूल है। वास्तविकता तो यह है कि देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में होने वाले चुनाव से ठीक पहले बंगाल ने नए वोटिंग ट्रेंड में शामिल होकर राजनीतिक दलों के लिए एक सबक भी दिया है।

यह ठीक है कि पश्चिम बंगाल के चुनाव में पोलराइजेशन हुआ है, लेकिन यह केवल धार्मिक ध्रुवीकरण का मामला ही नहीं है, मतदाताओं ने सुशासन, सुप्रबंधन और सतत सर्वांगीण विकास के लिए भी भारी तादाद में (लगभग 93%) वोटिंग की है। यह राज्य सरकार की सह पर अपना घर भरने, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने और सरकारी खजाना लूटने के विरुद्ध गुस्से का इजहार भी है। ठहरकर सोचना होगा कि मतदाता वे नहीं रह गए हैं जो शिकायतें करते थे, अब वह अपेक्षाकृत उन्नत जरूरत की एक पूरी सूची लिए हैं और उन पर समय सीमा में नतीजे देने वाली कार्रवाई की मांग जोर शोर से करते हैं। इसीलिए बंगाल से तृणमूल को दंड देने के साथ अप्रतिष्ठापूर्ण विदाई दी गई है। जनता ने तृणमूल को हटाकर आजादी के बाद से ही बंगाल में जीत का सपना देखने वाली भाजपा को पुरस्कृत किया है और हिदायत भी दी है कि उसे पूर्व की सरकार की तरह काम नहीं करना है। यह संदेश सभी दलों के लिए है।

टीएमसी बंगाल में हार गई। सबको पता था कि टीएमसी हारेगी, पर इतनी बुरी तरह से हारेगी, इसका अंदाजा किसी ने नहीं लगाया था। दिल्ली के टीवी चैनल टीएमसी की हार का अनुमान लगा रहे थे पर राज्य स्तर के लोग हार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अधिकतर लोगों का मानना था की कांटे का संघर्ष होगा। हार जीत का अंतर कम होगा, लेकिन यहां भाजपा की ऐसी सुनामी चली कि टीएमसी का सुपड़ा ही साफ हो गया। कहते हैं कि आप दूसरे को भरमा सकते हैं, अपने को नहीं। टीएमसी नेत्री ममता बनर्जी अंत तक लड़ने का दावा करती रही लेकिन उन्हें पता था की क्या होने वाला है क्योंकि पश्चिम बंगाल में बबुल का पेड़ उन्होंने ही बोया था। अल्पसंख्यक ध्रुवीकरण, भ्रष्टाचार, कुशासन, गुटबाजी की जो फसल उन्होंने रोपी थी, उसी को उन्होंने काटा है। कहते हैं चुनाव लोकतंत्र का महायज्ञ है और इस महायज्ञ को जिन मंत्रों के सहारे पूरा किया जाता है वह है जन सरोकारों से जुड़े मुद्दे। बदकिस्मती से अबकी बंगाल चुनाव मुद्दों से कटकर नारों और एक दूसरे पर कीचड़ उछलने के साथ-साथ पोलराइजेशन के इर्द-गिर्द ही लड़ा गया।

इस चुनाव की खासियत रही कि इस बार बांग्लादेशी घुसपैठियों के बरक्स राष्ट्रवाद तथा हिंदुत्व का बोलबाला रहा। भाजपा और तृणमूल के बीच हिंदुत्व पर दावेदारी को लेकर भी अपने-अपने तरीके से जोर आजमाइश हुई। देवी देवता वेशभूषा खान पान सब पर दावे प्रति दावे हुए। मालूम हो कि हिंदुत्व की राजनीति पिछले तीन दशक से भारत के राजनीतिक पटल पर छाई हुई है। लेकिन 2014 के चुनाव में इसने एक नया आयाम ग्रहण किया जब हिंदुत्व के चेहरे के रूप में मानी जाने वाली पिछड़ी जाति से आने वाले नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया। समय के साथ ममता बनर्जी ने भी अपने को अपडेट किया तथा मंच पर मां काली, दुर्गा से संबंधित स्तुति श्लोकों का गायन कर खुद को हिंदुत्व का झंडाबरदार साबित

करने की कोशिश की। लेकिन यह ज्यादा दिन नहीं चल सका। वोट बैंक को साडे रखना के लिए उनका अल्पसंख्यक प्रेम बाहर आया और बृहद हिंदू समाज में इसकी प्रतिक्रिया होने लगी। वर्ष 2021 में मिली प्रचंड जीत के बाद उनमें घमंड भी आया और उन्हें यह भरोसा हो गया कि वह अल्पसंख्यक ध्रुवीकरण तथा महिला वर्ग को नगद लाभ पहुंचा कर सदैव चुनाव जीतती रहेगी।

बंगाल के परिणाम को लेकर कई महत्वपूर्ण बिंदु हैं जिस पर चर्चा होगी लेकिन आज फिलहाल हम कुछ ऐसे मुद्दे पर केंद्रित करते हैं, जिनके चलते तृणमूल को मुंहकी खानी पड़ी है।

1. पश्चिम बंगाल में बड़े पैमाने पर हिंदू वोटो का ध्रुवीकरण हुआ। धार्मिक पहचान के आधार पर हुई लामबंदी के कारण बीजेपी को फायदा हुआ और तृणमूल को नुकसान पहुंचा।
2. पिछले 15 साल से शासन कर रही ममता बनर्जी खास कर दो कार्यकाल के दौरान केवल चुनिंदा लोगों के लिए काम किया। मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग शासन की कमियों के प्रति समय समय पर असंतोष जताता रहा लेकिन ममता सरकार ने उसे नजर अंदाज किया। सरकार का अंदर खाने बहुत विरोध था। राज्य में काम धंधे ठप्प पड़े थे। रोजगार की स्थिति दयनीय होती जा रही थी। पढ़े लिखे बांग्ला युवको का पलायन हो रहा था। इसे लेकर सत्ता का भारी विरोध था। सत्ता विरोधी लहर ने बीजेपी की झोली भर दी।
3. महिलाओं और लड़कियों के लिए ममता सरकार ने कल्याणकारी योजनाओं के तहत जो नगद राशि दी, वह चढ़ती महंगाई व अन्य कारणों से ऊंट के मुंह में जीरा जैसी ही थी। महिला सशक्तिकरण के दावे खोखले साबित हो रहे थे, वही हाल के दिनों में महिला सुरक्षा को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे थे। बीजेपी ने महिलाओं को दो गुना-तीन गुना राशि देने का वादा कर अपनी ओर आकर्षित किया। महिला सुरक्षा के प्रति भी गंभीर प्रयास करने की प्रतिबद्धता जताई है।
4. मां माटी मानुष और आमार सोनार बांग्ला के नाम पर तृणमूल कांग्रेस ने जो बाहरी का नॉरेटिव चलाया वह दांव उन पर उल्टा पड़ा। अपने लोगों ने उनके स्लोगन पर बहुत ध्यान नहीं दिया और बाहरी लोगों ने अपनी क्षेत्रीय पहचान को एकजुट करते हुए तृणमूल के विरोध में डटकर मतदान किया।
5. तृणमूल को सबसे ज्यादा नुकसान एसआईआर से हुआ। बड़ी संख्या में नाम काटे गए। नाम काटे जाने वालों में सर्वाधिक संख्या अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों की है जिनके भरोसे तृणमूल ताल ठोकती रही। यही कारण है कि ममता बनर्जी ने एसआईआर को चुनावी मुद्दा भी बनाया। चुनाव आयोग के साथ-साथ उच्चतम न्यायालय तक मामले को पहुंचाया। उच्चतम न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणी कि ₹एक बार अगर कोई वोट नहीं देगा तो आफत नहीं आ जाएगी₹ के बाद से ही यह लगने लगा था, कि चुनाव की रेस में तृणमूल पिछड़ गई है। भाजपा जो आरोप लगाती थी कि तृणमूल का वोट 30% से शुरू होता है को एसआईआर का सीधा फायदा हुआ। करीबी मुकाबले वाले सीटों पर बीजेपी की जीत हुई है।
6. पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी और वामपंथी दलों का खाता भी नहीं खुला था। इस बार गठबंधन के उम्मीदवारों को कई क्षेत्रों में अच्छा खासा वोट प्राप्त हुआ है। तृणमूल के लिए यह भी नुकसान का सौदा साबित हुआ है।
7. तृणमूल कांग्रेस चुनाव के दौरान जनसभाएं करने में ही जुटी रही। ममता बनर्जी नए लोगों को जोड़ने की बजाय अपने पुराने कार्यकर्ताओं पर ही भरोसा किया। भाजपा ने तृणमूल को चुनौती देने के लिए नए सिरे से संगठन को मजबूत किया। बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं को सीधे संपर्क किया तथा उनकी राय को प्रमुखता देते हुए अपनी कार्य योजना तैयार की।
8. तृणमूल कांग्रेस ने जिन प्रत्याशियों का टिकट काट दिया उन्हें चुनाव में सक्रिय करने में विफल रही। जिनके टिकट कटे हुए या तो घर बैठ गए या अन्य दलों में चले गए।
9. भारी पैमाने पर केंद्रीय बलों की तैनाती के कारण तृणमूल के पारंपरिक कार्यकर्ता वह उत्साह नहीं दिखा पाए जो चुनाव के दौरान पूर्व में दिखता था।
10. तृणमूल कांग्रेस बीजेपी के बड़े नेताओं की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीति बनाती रही, लेकिन विपक्षी द्वारा जमीन पर चल रही कार्रवाई का तोड़ नहीं खोज पाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ताबड़तोड़ रैली और रोड शो करते रहे, गृह मंत्री अमित शाह कैंप लगाकर चुनाव तक डटे रहे। बताते हैं कि चुनाव प्रचार शुरू होने तक बीजेपी बूथ स्तर तक एक लाख बैठकें कर जीत की रणनीति का खाका तैयार कर चुकी थी। तृणमूल अपने लोगों को सक्रिय करने में पिछड़ गई।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 16

जरूरी नागरिक चेतना के लिए कब होगा बदलाव

अमूमन चुनावी नतीजों के बाद खोया-पाया के आधार पर हारे हुए राजनीतिक दल हार के कारणों पर गौर करते हुए आगे के लिए खुद को दुरुस्त करते हैं तो जीतने वाले जनता से किए वादों को पूरा करने की कवायद में लग जाते हैं। लेकिन पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम आने के बाद हार को स्वीकारने तथा जीत का जश्न मनाने की जगह हिंसा का तांडव मचा हुआ है। राज्य के अगले मुख्यमंत्री के संभावित उम्मीदवार सुबेन्दु अधिकारी के निजी सचिव चंद्रनाथ रथ सहित अलग-अलग इलाकों में अब तक पांच लोगों की हत्या की जा चुकी है। हिंसक घटनाओं के लिए राजनीतिक दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप मढ़ रहे हैं। बीजेपी के राज्य प्रमुख ने दावा किया है कि तृणमूल के कार्यकर्ता भाजपा का भेष धारण कर हिंसक वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। दूसरी तरफ तृणमूल का कहना है कि भारतीय जनता पार्टी शासकीय संरक्षण में गुंडा तत्वों को आगे कर बदले की कार्रवाई के तहत तोड़-फोड़, लूट-मार को सह दे रही है। ताज्जुब की बात है कि यह सब पश्चिम बंगाल में तब हो रहा है जब घोषित रूप से लाखों की तादाद में केंद्रीय बलों की तैनाती है।

रामशिरोमणि शुक्ल

इसे लिखने के पहले सोशल मीडिया पर वायरल दो वीडियो देखने को मिली। एक वीडियो में मालगाड़ी से भारी संख्या में बुलडोजर भरकर कोलकाता ले जाया जा रहा है। दूसरा वीडियो दो हिस्से में है। पहले हिस्से में ढेर सारे मर्द मिलकर चुनाव में बुरी तरह पराजित पूर्व मुख्यमंत्री (कोई पुरुष ममता बनर्जी का स्वांग किया हुआ है) को रस्सी से बांधकर घसीट रहे हैं। दूसरे हिस्से में ढेर सारी महिलाएं पूर्व मुख्यमंत्री को घसीट रही है और पिट रही हैं। एक सामान्य नागरिक की रोजमर्रा की जिंदगी में क्या इस बात से कोई फर्क पड़ता है कि यह सब घटनाएं राजनीतिक नफा नुकसान के नाम पर हो रही हैं? क्या न्याय इस आधार पर होगा कि 24 परगना के मध्य ग्राम में आततायियों के ताबड़तोड़ चार गोली लगने से ढेर हुए चंद्रनाथ का संबंध भाजपा से था अथवा वीर भूमि में हिंसक भीड़ द्वारा मारे गए अबीर शेख का रिश्ता तृणमूल कांग्रेस से था? क्या हैवानियत का प्रतिकार इस आधार पर किया जाएगा की मारने वाला इस पार्टी का है या उस पार्टी का? दुर्भाग्य

बस इस वक्त हमारा समाज अपने विवेक के इसी पड़ाव पर आ खड़ा हुआ है।

पश्चिम बंगाल विधानसभा का चुनाव दो चरणों में संपन्न हुआ। बड़े पैमाने पर राज्य में केंद्रीय पुलिस बल की तैनाती की गई ताकि कोई हिंसक अनहोनी ना हो सके। चुनाव के दौरान ध्रुवीकरण की खूब कोशिशें हुई, उत्तेजक नारे भी गढे गए, लेकिन छिटपुट झड़पों के अलावा कोई हिंसक वारदात नहीं हुई। इस पर सभी वर्ग के लोगों ने संतोष भी जताया। परिणाम आने के बाद खुद प्रधानमंत्री ने अपने मुख्य संबोधन में कानून व्यवस्था का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञात इतिहास में पहली बार बंगाल में हिंसा रहित चुनाव हुआ है। निश्चित रूप से इसका श्रेय शासन प्रशासन को जाता है। लेकिन परिणाम आने के बाद ऐसा क्या हो गया कि राज्य में हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। गिरोह बनाकर सभी एक दूसरे को नीचा दिखाने, सबक सिखाने

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 17

की होड़ में लगे हैं। दुकान, मकान, दफ्तर पर कब्जा कर लेने, तोड़कर जमींदोज कर देने की सनक चढ़ी हुई है। आसनसोल में कांग्रेस के लोगों ने टीएमसी के दफ्तर पर कब्जा कर लिया। नईहटी में बीजेपी के लोगों ने टीएमसी के दफ्तर को गिरा दिया। हावड़ा में बीजेपी के कार्यकर्ताओं को घेर कर पीटा गया। इस तरह की सुनियोजित हिंसा का दौर पिछले 72 घंटे से राज्य के विभिन्न हिस्सों में चल रहा है। सरकार ने एहतियात के तौर पर गिरफ्तारियां की हैं, कानून व्यवस्था को ठीक करने के लिए निर्देश भी जारी किए हैं, किंतु अपराध थम नहीं

रहे हैं। अपने-अपने चश्मे से सभी खुद को जायज ठहराते हुए दूसरे पर हमला कर रहे हैं। लगातार मौत की खबरें भी आ रही हैं। ऐसे मौकों का फायदा उठाने वाले अलग-अलग रंग देकर आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। नतीजा आने के बाद से ही धार्मिक आधार पर गोलबंदी की बातें भी हो रही है। समाचार विश्लेषण में भी इस पर जोर दिया जा रहा है की एक पार्टी से जीतने वाले केवल हिंदू हैं जबकि अन्य पार्टियों से जीतने वाले अधिकांश दूसरे संप्रदाय के हैं। प्रमुख राष्ट्रीय समाचार चैनल भी आंकड़ों के साथ इसकी एनालिसिस कर रहे हैं। इसका असर नीचे जमीन तक हो रहा है। लोग दूसरे की आलोचना को खुद पर हमला मान रहे हैं। दूसरे पार्टी का आलोचक उनका शत्रु है। वह अपने पार्टी के एकमात्र रक्षक हैं। शत्रु का वध उनका अधिकार है। वह किसी भी तरह की हिंसा कर सकते हैं। उन्हें राजकीय न्याय और व्यवस्था की कोई जरूरत नहीं है। ऐसा करने वालों के मन में यह गुरूर है की विरोधी को दंडित करना उनका अधिकार है और वह अपने दल के लोगों की रक्षा के नाम पर सब कुछ बेधड़क कर सकते हैं।

बंगाल में जारी हिंसा को केवल चुनावी प्रतिक्रिया के रूप में देखना नादानी होगी। अब हमारे समाज का कोई न कोई हिस्सा हर रोज ऐसे ही किसी न किसी मुद्दे को लेकर ब्यग्र रहता है तथा जिसे विरोधी मानता है उसका वध करने के लिए सदैव तत्पर रहता है।

अबकी बार बंगाल चुनाव ने हिंदू मन को झकझोरा, मुस्लिम मानस को भी झकझोरा लेकिन राष्ट्र के नागरिक समाज की चेतना को कोई तवज्जो नहीं दी। लोकतंत्र के लिए जरूरी समझे जाने वाले विपक्ष की बात को भी कई संवेदनशील मौकों पर अनसुना कर दिया गया। सब कुछ अपनी-अपनी राजनीति के हिसाब से निश्चित हुआ। बड़े पैमाने पर केंद्रीय बलों को शामिल किया गया लेकिन वह राष्ट्र की मजबूत और निष्पक्ष कानून की सख्त व्यवस्था का प्रतीक बनकर नहीं उभरा। पिछले तीन दिनों से चल रहे घटनाक्रम से साफ दिखता है कि हमारे लिए कानून व्यवस्था का मतलब वह और सिर्फ वही व्यवस्था है जैसा हम चाहते हैं। न्याय का मतलब वह और सिर्फ वही तजवीज है जिसे हम उचित समझते हैं। यहां दूसरों की टिप्पणी, दूसरों की चिंता और कानून व्यवस्था की राष्ट्रीय अवधारणा की कोई आवश्यकता नहीं है। हम जब चाहे आलोचना कर सकते हैं, उसकी धज्जियां उड़ा सकते हैं और उसे अपने हाथ में ले सकते हैं। यह लोकतंत्र के क्षरण का भी प्रतीक है। अंग्रेजों के शासन से मुक्त हुए भारत को एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में बढ़ाने का प्रयास किया गया। आज का भारत वैदिक युग का राष्ट्र नहीं, जहां राजा ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। हमने गुरुकुलों की जगह स्कूल और कॉलेज बनाए, राजा की सभा की जगह लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभाएं और न्यायालय बनाए। ऐसी संस्थाएं एक दिन में नहीं बनती, धीरे-धीरे विकसित होती हैं, अपना आदर्श चरित्र प्राप्त करने में इन्हें कई कई दशक लगते हैं।

दुर्भाग्य से या अनुभवहीनता के कारण आधुनिक राष्ट्र के निर्माण के साथ हम आधुनिक नागरिक संस्कृति का विकास उस तरह नहीं कर सके जैसी की जरूरत थी। आजादी मिलने के 78 साल बाद भी देश के नागरिक अपनी अस्मिता धर्म और जाति से ही जोड़कर देखते हैं। आप थोड़ा ठहर कर ठीक से देखिए कि हमारे देश में कितने जातीय संगठन हैं, किस तरह से वह अपना गौरव गान करते फिर रहे हैं और किस तरह से हम अपने जन प्रतिनिधि चुनते हैं? ऐसी किसी भी बात पर जिसे वे अपनी जाति या धर्म के लिए अपमानजनक समझते हैं, अपना विरोध दिखाने के लिए क्या करते हैं? सीधा जवाब है कि राष्ट्र के कानून को तोड़ते हैं, व्यवस्था को भंग करते हैं, संपत्ति को नष्ट करते हैं और सरेआम गोली मारकर हत्या कर देते हैं। आप खुद सोचिए उनकी पहली निष्ठा किसमे है, जाति या संप्रदाय के साथ अथवा राष्ट्र के साथ। विरोध हमारा अधिकार है, अभिव्यक्ति हमारा अधिकार है लेकिन हिंसा तो हमारा अधिकार नहीं है।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 18

घटता खजाना देख सोना की खरीदारी पर संयम की अपील

प्रधानमंत्री ने पिछले दो दिनों में देश की जनता को लगातार दो बार खरीदारी से परहेज करने और खर्चे में कटौती करने की सलाह दी हैं। खाड़ी के देशों में युद्ध के हालात को देखते हुए प्रधानमंत्री ने देश से पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस, खाद्य तेल, इलेक्ट्रॉनिक समान और सोने की खरीदारी पर संयम बरतने की अपील की है। उन्होंने देश-विदेश घूमने के लगातार बढ़ते ट्रेंड पर भी लगाम लगाने की इच्छा व्यक्त की है।

प्रभात ओझा

आमतौर पर सरकारें इस तरह की अपील खराब हालत हो जाने पर और अधिक पैनिक होने से बचने के लिए करती हैं। तो क्या दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के पायदान से फिसल कर छठवें स्थान पर पहुंचे भारत की वित्तीय स्थिति नाजुक है? क्या भारत के खजाने का आकार कम हो गया है अथवा आपदा को अवसर में बदलने के लिए संयम और परहेज का टोटका आजमाने वाली बात है? पक्ष के लोग इसे पूर्व की तैयारी बता रहे हैं जबकि विपक्ष इसे आर्थिक और कूटनीतिक नादानी की संज्ञा दे रहा है। लोग यह भी कह रहे हैं कि हुगली नदी मे नौकायन का लुत्फ लेकर लौटे प्रधानमंत्री नागरिकों को पर्यटन से परहेज का पाठ पढ़कर खुद कई देशों की यात्रा पर जल्दी ही फुर्र होने वाले हैं।

पहले से ही रसोई गैस की किल्लत और महंगाई का दंश झेल रही आमजनता पेशोपेश में है। नोटबंदी पर 50 दिन मुंह सील लेने, रसोई गैस सिलेंडर पर मिल रही सब्सिडी छोड़ने, करोना महामारी को भगाने के लिए मोबाइल का टॉर्च जलाने, ताली थाली पीटने, और राम आएंगे की खुशी में घर के मुंडेर पर पांच दिया जलाने की परीक्षा में खरी उतरी भारतीय जनता को अब खरीदारी से परहेज का टास्क मिला है, जनता मानसिक रूप से तैयारी कर रही है। यानी जनता की एक अग्नि परीक्षा और।

मालूम हो कि ईरान बनाम अमेरिका-इजरायल का युद्ध अब टीवी डिबेट बाहर निकलकर भारत के आम लोगों की रसोई, खेत, पेट्रोल पंप और बैंक बैलेंस तक पहुंच रहा है। पिछले दो महीने में ही व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की कीमत में लगभग 1000 की वृद्धि हो

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 19

चुकी है। किसी भी समय पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ाने की आशंका जताई जा रही है। खाद्य तेल के दाम लगातार बढ़ रहे हैं।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार गिरावट पर है। युद्ध शुरू होने के पहले फरवरी में यह रिकॉर्ड 728 डॉलर तक पहुंच गया था जो की अब घटकर 690 अरब डॉलर ही बचा है। रिजर्व बैंक के ताजा आंकड़ों के मुताबिक मई के पहले हफ्ते में ही रिजर्व लगभग 8 अरब डॉलर घटा है। यानी दबाव के संकेत दिखने लगे हैं। सरकार को वैश्विक अनिश्चितता, मंहगे आयात या डॉलर पर दबाव की चिंता है इसीलिए प्रधानमंत्री ने जिन वस्तुओं पर विदेशी मुद्रा ज्यादा खर्च होते हैं उन वस्तुओं की खरीदारी में कटौती करने की अपील की है।

भारत का सालाना तेल आयात बिल 150 अरब डॉलर तक पहुंचता है। अगर कच्चे तेल की कीमतें युद्ध के कारण बढ़ती रही तो यह आयात बिल को और अधिक बढ़ा सकता है। भारत अपनी जरूरत का 85% क्रुड आयल विदेश से खरीदता है। अगर $10 प्रति बैरल की भी बढ़ोतरी होती है तो आयत का बिल 15 अरब डालर तक बढ़ने की संभावना रहती है। महंगे तेल का असर सिर्फ कार चलाने तक सीमित नहीं रहता, उसके कारण सब कुछ महंगा हो जाता है।

इसी तरह भारत प्रतिवर्ष करीब 700 से 800 टन सोना आयात करता है। सरकार को तेल के बाद सबसे ज्यादा आयात बिल सोने का ही देना पड़ता है। आज देश में हर आदमी बैंक से ज्यादा सोना पर भरोसा करता हैं, यही कारण है कि पारंपरिक शादी विवाह के अलावा भी सोने की खरीदारी बड़े पैमाने पर होती है। खुद भारतीय रिजर्व बैंक भी लगातार सोना खरीद रहा है। मार्च 2026 तक रिजर्व बैंक के पास 880 तन गोल सोना रिजर्व था जिसकी कीमत 113 अरब डॉलर से अधिक आंकी गई है।

भारत हर साल लगभग डेढ़ करोड़ टन खाद्य तेल इंडोनेशिया और मलेशिया से मांगता है। इसी तरह खेती के लिए खाद का आयात भी करना पड़ता है भारत अपनी पोटाश की जरूरत का 100% आयात करता है। आजकल पर्यटन का भी चलन बढ़ा है। थाईलैंड दुबई सिंगापुर यूरोप और अमेरिका की यात्रा भारतीयों के लिए आकर्षक हुई है। इन पर भी विदेशी मुद्रा का खर्च होता है। प्रधानमंत्री ने खर्चे में कटौती का आह्वान किया है।

भारत के पास पूर्व के दो संकटों का अनुभव है। पहला,वर्ष 1991 में देश के पास सिर्फ दो हफ्ते का आयात कवर बचा था तब भारत को अपना सोना गिरवी रखना पड़ा था। और दूसरा, अमेरिका ने जब गेहूं देने से इनकार कर दिया था तब तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने देश के लोगों से एक वक्त उपवास रखने की अपील की थी।

आज वैश्वीकरण का दौर है। इस दौर का प्रचलित व्यवसायिक मुहावरा है ₹खर्च बढ़ाने से आमदनी बढ़ती है₹। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्टिन एल बेंजामिन भी आमदनी बढ़ाने के लिए लाभ को लूटाने की वकालत करते हैं। विकास की रफ्तार, जीडीपी की ग्रोथ को ऊंचाई देने के लिए खर्च को बढ़ाने की बात प्रमुखता से की जाती है।

अब जबकि संकट दिखने लगा है तो खर्चे में कटौती की बात की जा रही है। हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं है। भारतीय चित्ति हमेशा से "खर्चे में कटौती को ही आमदनी मनाती रही है"। हमारा समाज पीढ़ी दर पीढ़ी पारंपरिक रूप से चादर के हिसाब से पैर फैलाने का आदी रहा है। कर्ज लेकर घी पीने को पाप समझा जाता था।

पांच राज्यों के चुनाव से निपटने के बाद प्रधानमंत्री ने देश की जनता को जो त्याग का मंत्र दिया है। उम्मीद की जानी चाहिए कि हर बार की तरह इस बार भी जनता उसे सिर माथे पर लेगी तथा सरकार के साथ दृढ़ता से खड़ी होगी।

लेकिन कितना अच्छा होता कि इसकी शुरुआत ऊपर से होती। बड़े नेताओं अधिकारियों की गैर जरूरी यात्राओं में कटौती होती तो उसका सीधा असर नीचे तक पहुंचता। गांधी जी भी मानते थे की जो काम वह खुद नहीं कर सकते, उसे करने के लिए वह अन्य से अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? दूसरे से खर्चे पर संयम बरतने और कटौती करने की अपेक्षा रखने वाले क्या खुद के जीवन में इसका पालन करेंगे?

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 20

अच्छे दिन का तो पता नहीं पर महंगे दिन आ गए

आलोक जयहिंद

महंगाई अपना पैर पसारने लगी है। खुदरा और थोक दोनों स्तर पर महंगाई रिकॉर्ड ऊंचाई की ओर जा रही है। थोक महंगाई 3.8 के मानक से उठकर अब 8.6 का आंकड़ा छू चुकी है। जैसे तैसे रोज कमाने खाने वाले तो पहले से ही परेशान रहे हैं, हालिया बढ़ोतरी से उनकी सांसे अटकी हुई है, खाते पीते मध्य वर्ग के पेशानी पर भी बल पड़ने लगा है। महंगाई के चारों तरफ से जकड़ने का सिलसिला अगर आगे भी बना रहता है तो उनके भी कस बल ढीले होने वाले हैं जो अब तक सरकार की आर्थिक नीतियों का समर्थन करते रहे हैं।

खाड़ी युद्ध के कारण दुनिया भर में चीजों के दाम बढ़े हैं। सभी देश हालात से निपटने और अपने नागरिकों में आपूर्ति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए इंतजाम भी कर रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री देश की जनता से खरीदारी और पर्यटन पर संयम बरतने की अपील कर खुद कर देश की यात्रा पर है। नीदरलैंड की धरती से उन्होंने भविष्य वाणी की है किया दशक आपदा का दशक है आगे और भी कठिनाई आ सकती है। बहुत हुई महंगाई की मार का नारा देकर गत 12 वर्षों से केंद्र की सत्ता में बैठी पार्टी के अगुआ रसोई गैस खाने का तेल डीजल पेट्रोल के उपयोग पर लगाम लगाने का मंत्र उपयोगी बता रहे हैं। उत्साही अनुसांगिक संगठन के कार्यकर्ता बिना तेल के पुड़ी सब्जी बनाने के नए-नए नुस्खे का रील बनाकर सोशल मीडिया पर परोस रहे हैं। ऐसे ही एक उत्साही कार्यकर्ता है सोमदत्त जी वे भी वीडियो में तेल खाने के नुकसान गिना रहे हैं। जबकि उनका बेटा कल ही खाद्य तेल का 5

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 21

किलो का डिब्बा पहले से डेढ़ गुना अधिक कीमत देकर खरीद कर लाया है।

कुछ दिन पहले तक भारत को बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए त्याग और आर्थिक समर्पण का ढिंढोरा पीटने वालों में शामिल लोग भी बीती रात से डीजल पेट्रोल का दाम बढ़ने के बाद से ठंडे पड़े हैं। सोशल मीडिया पर उनके रील्स की रफ्तार घट गई है। सरकार ने डीजल और पेट्रोल की कीमतों में तीन रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी की है। उन्हें यह लगने लगा है कि यह बढ़ोतरी केवल डीजल और पेट्रोल के दम तक सीमित नहीं है आने वाले दिनों में रोजाना प्रयोग आने वाली चीजों से लेकर घरों के मासिक खर्चे पर भी भारी बोझ बढ़ने वाला है जिसका असर रोजमर्रा की सेवाओं पर भी दिखाई देगा।

तेजी से बिकने वाले उपभोक्ता उत्पाद की बड़ी कंपनियों ने पहले ही लागत के दबाव को लेकर चिंता जताना शुरू कर दिया है बिस्किट स्नैक्स नूडल्स खाद्य तेल पैकेट बंद फूड पेय पदार्थ जैसे उत्पाद लॉजिस्टिक नेटवर्क पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। ऑपरेशन मूल्य का 6 से 10% हिस्सा लॉजिस्टिक में खर्च होता है इसलिए डीजल पेट्रोल की ऊंची कीमतें खर्चों को बढ़ा देती हैं इसलिए जाहिर है कि उनके दाम भी कभी भी किसी भी क्षण बढ़ाई जा सकते हैं।

दूध की कीमतों में पहले से ही लागत बढ़ोतरी के संकेत मिलते रहे हैं इधर अमूल और मदर डेयरी में दूध की कीमतों में दो रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी कर दी है जिसका करण परिवहन और परिचालन खर्चों में बढ़ोतरी बताया गया है अब दूध के दाम बढ़ने से दूध से बनने वाले उत्पाद दही मक्खन पनीर चीज और आइसक्रीम के दाम में भी जल्दी ही वृद्धि देखने को मिल सकती है।

भारत में खाद्य आपूर्ति चेन काफी हद तक सड़क परिवहन पर निर्भर करती है। सब्जियां फल अनाज दाल पैकेट बंद फूड एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में खर्चा बढ़ जाता है। ऐसे में डीजल की बढ़ती लागत से माल ढुलाई शुल्क में भी वृद्धि होगी जिसे ग्राहकों पर डाल दिया जाएगा। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि अगर तेल की कीमतें लंबे समय तक ऊपर उठी रहती है तो रसोई के बजट पर महंगाई का दबाव और अधिक बढ़ जाएगा।

महंगाई का बुरा असर देश के किसानों पर भी पड़ेगा क्योंकि किसान मुख्य रूप से डीजल से चलने वाले उपकरणों पर निर्भर रहते हैं ट्रैक्टर सिंचाई पंप कटाई मशीन डीजल की बढ़ती लागत के कारण मांगे हो जाएंगे। किसान को खेत से अपना सामान बाजार तक पहुंचाने की भी लागत बढ़ जाएगी। तेल की महंगाई का सीधा असर ग्रामीण परिवारों पर पड़ने वाला है।

कोरियर कंपनियों और ऑनलाइन शॉपिंग कंपनियों का लॉजिस्टिक भी महंगा हो जाएगा फ्यूल की बढ़ती कीमत आखिरी मिल की डिलीवरी का खर्च बढ़ा देगी इस बढ़ोतरी से डिलीवरी शुल्क में बढ़ोतरी छठ की कमी और मिनिमम ऑर्डर प्राइस में बढ़ोतरी की संभावना बढ़ गई है।

तेल के दाम बढ़ने से परिवहन लागत में वृद्धि के साथ-साथ साबुन शैंपू डिटर्जेंट सहित तमाम तरह के घरेलू चीजों के दाम बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। कुल मिलाकर महंगाई इस समय अपना उग्र रूप दिखाना शुरू कर दिया है। प्रधानमंत्री खुद वर्तमान समय को आपदा का दशक बता रहे हैं। सरकार के संतुलनकार लोग पहले से ही कटौती में जी रहे लोगों को संयम बरतने और कम पर गुजारा करने की राय दे रहे हैं। आम जनता महंगाई के भविष्य को लेकर भयभीत है। महंगाई की मार से बचाकर अच्छा दिन लाने वाले अर्थशास्त्री भी अब अंदर खाने यह मानने लगे हैं की जनता के महंगे दिन आ गए हैं।

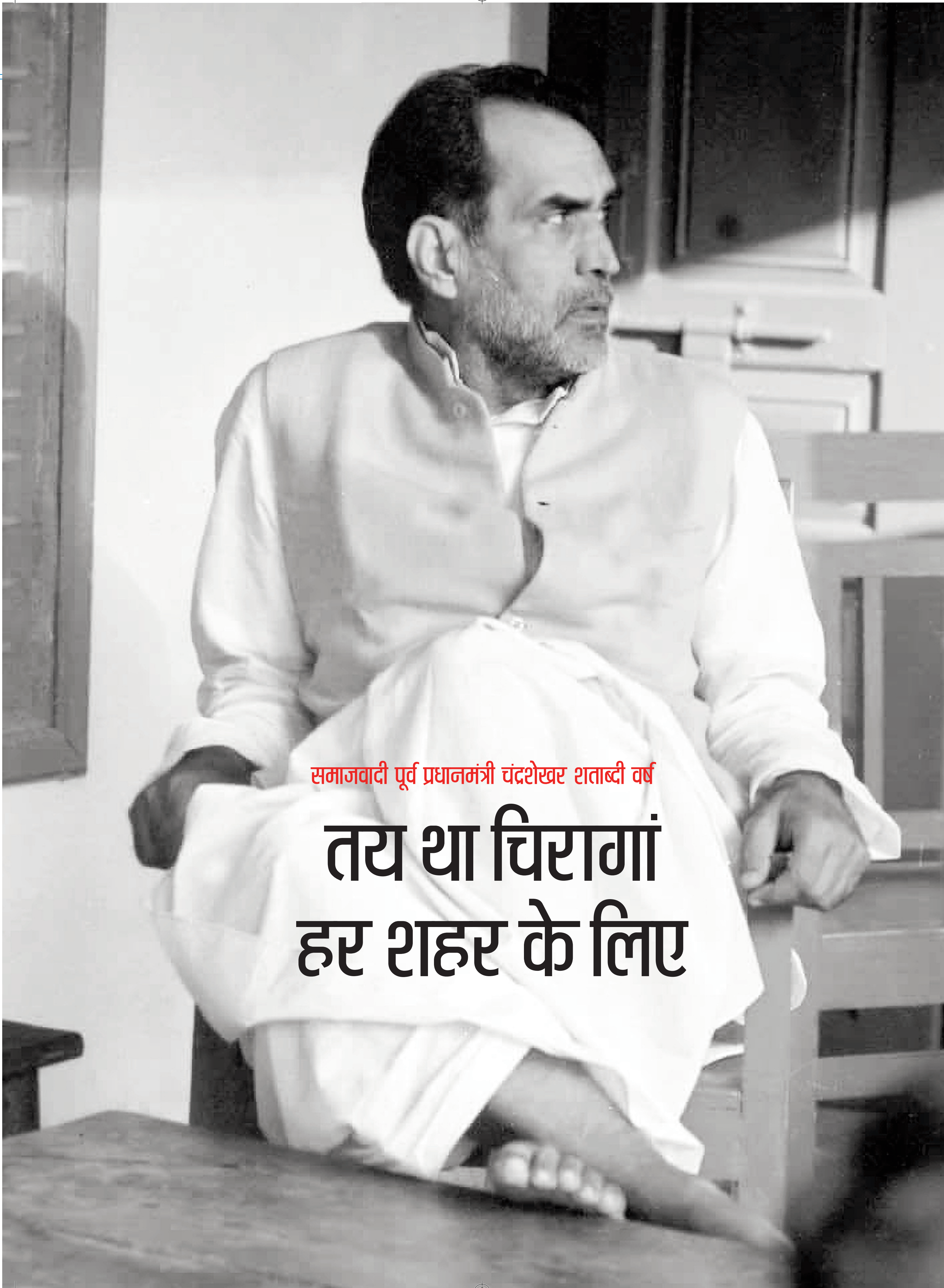

समाजवादी पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर शताब्दी वर्ष

तय था चिरागां हर शहर के लिए

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 23

■ अनिल तिवारी

देश भर में समाजवादी प्रधानमंत्री रहे चंद्रशेखर जी का जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष में देश के कोने कोने में आए दिन कोई ना कोई आयोजन संपन्न हो रहा है। सभा संगोष्ठियों में उनके समाजवादी सरोकारों को प्रमुखता से उकेरा जा रहा है। समाज के विभिन्न वर्गों के लोग अपने-अपने दृष्टि से उनके समाजवादी राजनीतिक जीवन का आकलन कर रहे हैं। एक साधारण किसान पृष्ठभूमि के परिवार से निकलकर प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचने वाले चंद्रशेखर का जुड़ाव समाजवादी आंदोलन से शिक्षा के दौरान ही हो गया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में मी की पढ़ाई के दौरान उन्होंने पहले समाजवादी संगोष्ठी हिंदू हॉस्टल के कामन हाल में आयोजित कराने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। उस संगोष्ठी का संचालन अंबादत्त पंत ने किया था। सगोष्ठी को विश्वविद्यालय छात्र संघ के तत्कालीन अध्यक्ष काशी नाथ मिश्र ने भी संबोधित किया था।

राजनीति शास्त्र में एम ए करने के बाद पंत जी की राय से आगे के शोध के लिए चंद्रशेखर जी भू गए और वहां के कुलपति आचार्य नरेंद्र देव जी से मिलकर शोध करने की जिज्ञासा प्रकट की। आचार्य नरेंद्र देव जी ने उन्हें समझाया की शोध करने से अच्छा है समाजवादियों के साथ मिलकर समाज को बदलने समाज में खुशहाली लाने का प्रयास हो। आचार्य जी के कहने पर चंद्रशेखर जी बलिया आ गए तथा समाजवादी विचारधारा के प्रचार प्रसार में लग गए। आगे चलकर संसदीय राजनीति में हिस्सा लेने की ललक में वह कांग्रेस के करीब गए लेकिन लंबे समय तक टिक नहीं पाए।

आपातकाल के दौरान समाजवादियों की पहल पर गठित जनता पार्टी के अध्यक्ष बने, फिर प्रधानमंत्री भी बने लेकिन विचारधारा के तौर पर वे आखिर तक समाजवादी ही रहे। बोलचाल खान-पान रहन-सहन वेशभूषा सब में वह एक ठेठ समाजवादी थे। बलिया जिले के मूनछपरा गांव के कई बार प्रधान रहे समाजवादी नेता राधा किशुन तिवारी चंद्रशेखर जी से जुड़ा एक संस्मरण अक्सर सुनाते थे। बापू भवन में समाजवादियों की बैठक चल रही थी, उसी दौरान किसी कार्यकर्ता ने सूचना दी कि उसके किसी परिचित को कोतवाल साहब ने पकड़ लिया है। मीटिंग खत्म होते ही चंद्रशेखर जी राधा किशुन व अन्य दो लोगों के साथ कोतवाल साहब के यहां पहुंचे और गिरफ्तार व्यक्ति को छोड़ने के लिए कहा। कोतवाल ने कहा कि उसके पास से माल बरामद हुआ है, कैसे कैसे छोड़ दिया जाए। चंद्रशेखर ने पूछा क्या माल मिला है, तो कोतवाल ने बताया कि साइकिल बरामद हुई है। तब चंद्रशेखर जी ने बड़े ही संयत भाव से कोतवाल साहब को समझाया कि "अरे कोतवाल साहब, समाजवादी कार्यकर्ता है। कोई जरूरत का सामान लाने की जल्दीबाजी में किसी की साइकिल लेकर चला गया होगा। जिसकी साइकिल है उसे दे दीजिए और इसको भी छोड़ दीजिए। कोतवाल मुस्कुराया और कहा कि नेताजी मैं इन्हें अभी छोड़ दूंगा लेकिन इन्हें कहिए कि ये भी अपनी बुरी आदतें छोड़ दें। इस घटना के बाद शिवमंगल ने समाजवाद का झंडा थाम लिया। बाद में उनका उपनाम 'गणतंत्र बाबा'हो गया था। इलाके के लोग उन्हें गणतंत्र बाबा के नाम से ही जानते बुलाते थे। वे जब तक जीवित रहे समाजवादी बनकर ही रहे।

इसी तरह से तिनका तिनका जोड़कर तब के नेताओं ने देश में समाजवाद को खड़ा किया था। चंद्रशेखर जी की जन्म शताब्दी के बहाने पड़ताल करने की कोशिश करते हैं कि आज देश में समाजवाद की तासीर कैसी है।

आज से 92 वर्ष पहले, 17 मई 1934 को सौ समाजवादियों ने मिलकर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया था। असल में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नींव नासिक जेल में ही पड़ गई थी। जहां कांग्रेस के भीतर सक्रिय समाजवादियों ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाने का निर्णय लिया था। इतिहास के मुताबिक सोशलिस्टों ने दो-तीन वर्ष पहले ही बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब एवं अन्य राज्यों में संगठित समूह के तौर पर कार्य करना शुरू कर दिया था।

आज जब भारत में समाजवादियों की पहले संगठित राजनीतिक राष्ट्रीय दल के गठित होने के बाद 92 वर्ष हो रहे हैं, तब यह जरूरी है कि यह मूल्यांकन किया जाए कि समाजवादी विचार को आगे बढ़ाने में गांधी, आचार्य नरेंद्र देव, जेपी, लोहिया, यूसुफ मेहर अली, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, फरीदुल अंसारी, सत्यवती, अरुणा आसफ अली, अच्युत पटवर्धन, चंद्रशेखर से लेकर कर्पूरी ठाकुर, मधु लिमये, जॉर्ज फर्नांडीज, राजनारायण, मधु दंडवते, एसएम जोशी, मृणाल गोरे आदि समाजवादी नेताओं की विरासत को संभालने वाले कहां पहुंचे

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 24

गांधीजी के हस्तक्षेप के बाद जेपी-लोहिया को रिहा किया गया।

डॉ लोहिया इलाज कराने गोवा पहुंचे थे लेकिन जब उन्हें गोवा के स्थानीय नागरिकों ने पुर्तगाली शासकों के अत्याचारों की व्यथा सुनाई तब डॉ लोहिया ने पहली बार पुर्तगाली शासकों को ललकारा। बाद में 1948 में सोशलिस्ट पार्टी के कांग्रेस से अलग हो जाने के बाद समाजवादियों ने मधु लिमये, एसएम जोशी, एनजी गोरे, मधु दंडवते के नेतृत्व में सतत आंदोलन चलाकर 15 वर्ष बाद गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने में सफलता हासिल की थी।

आजादी मिलने के बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी देश को समाजवाद की दिशा में जिन कार्यक्रमों को लागू कर देश का राष्ट्र निर्माण कर आगे ले जाना चाहती थी, उसके लिए कांग्रेस पार्टी और सरकार तैयार नहीं थी। कांग्रेस का दक्षिणपंथी समूह चाहता था कि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी या तो कांग्रेस में विलय करें या समाजवादी, कांग्रेस पार्टी से अलग हो जाएं। इस मुद्दे पर समाजवादियों ने 1948 में कानपुर सम्मेलन में विस्तृत चर्चा की। चर्चा करने के बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से कांग्रेस शब्द हटाने का निर्णय लिया ताकि कांग्रेस सरकार पर दबाव डालकर उसे समाजवादी रास्ते पर ले जाया जा सके।

अलग होने का एक कारण यह भी था कि उस समय देश में कांग्रेस और सोशलिस्टों के अलावा कम्युनिस्टों और हिंदू महासभा की वैचारिक धारा मजबूत थी। हालांकि ईएस नंबूदिरीपाद जैसे कम्युनिस्ट कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में ही थे। परंतु 1934 से 1948 के 14 वर्षों के अनुभव और हिंसा, केंद्रीकरण, रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के भारत के कम्युनिस्टों के फैसलों पर प्रभाव एवं रूसी क्रांति के बाद के अनुभव के साथ-साथ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में कम्युनिस्टों की भूमिका आदि प्रश्नों पर समाजवादियों और वामपंथियों में मतभेद थे।

समाजवादी चाहते थे कि कांग्रेस का विपक्ष भी लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी रहे, इस कारण सत्ता छोड़कर समाजवादियों ने विपक्ष में रहकर राष्ट्र निर्माण का मोर्चा सम्हाला।

प्रधानमंत्री बन जाने के बाद जवाहरलाल चाहते थे कि समाजवादी कांग्रेस का संगठन सम्हालें। परंतु डॉ लोहिया ने शर्त लगा दी कि स्वयं प्रधानमंत्री और मंत्रियों का संगठन में कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए तथा जरूरत पड़ने पर संगठन को सरकार के खिलाफ खड़ा होने का अधिकार होना चाहिए। बाद में जेपी ने भी 14 सूत्री पत्र दिया, जिसे कांग्रेस ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

इतिहास गवाह है 1934 से अब तक अनेक समाजवादी नेता घूम-फिर कर कांग्रेस में शामिल होते रहे हैं। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन के बाद समाजवादियों ने केवल कांग्रेस पार्टी को वैचारिक दिशा ही नहीं तमाम समाजवादी कार्यक्रम भी दिए। इतिहास यह बताता है कि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय बैठकों और राज्य इकाइयों में जो प्रस्ताव पारित होते थे, उन पर कांग्रेस पार्टी में गंभीर चर्चा हुआ करती थी तथा तमाम महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार कर लिये जाते थे।

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की आजादी के आंदोलन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन को सफल बनाने में रही। 8 अगस्त 1942 को गांधी जी द्वारा 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का जो नारा दिया था उसे मुंबई के तत्कालीन मेयर युसूफ मेहर अली ने गढ़ा था। महात्मा गांधी सहित सभी वरिष्ठ कांग्रेसियों को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिये जाने के बाद समाजवादियों ने भूमिगत आंदोलन चलाने का निर्णय लिया था। 9 अगस्त को समाजवादी नेत्री अरुणा आसफ अली ने ग्वालिया टैंक (आज के आजाद मैदान) मुंबई में तिरंगा फहराया था। यह कौन भूल सकता है कि जेपी ने इसी आंदोलन के दौरान हजारीबाग की जेल से भागकर भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व किया।

दुनिया के इतिहास में 1942 का आंदोलन सबसे बड़ा जन आंदोलन माना जाता है। क्योंकि इस आंदोलन में पचास हजार से ज्यादा आंदोलनकारी शहीद हुए तथा सजाएं हुई थीं। डॉ लोहिया और जेपी को लाहौर की जेल में रखा गया था। अंग्रेजों ने डॉ लोहिया को लाहौर की उसी जेल में रखा था जहां से भगतसिंह को फांसी दी गई थी। टॉर्चर करने के कारण लोहिया का स्वास्थ्य बिगड़ गया था।

जब यह साफ हो गया था कि अंग्रेज सत्ता का हस्तांतरण करेंगे, तब कांग्रेस के सभी नेताओं को छोड़ दिया गया, लेकिन सबसे आखिर में,

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 25

1952 में पहला आम चुनाव सोशलिस्ट पार्टी ने जोर-शोर से लड़ा लेकिन उसे केवल 10% वोट ही प्राप्त हुए क्योंकि देश के मतदाताओं ने कांग्रेस पार्टी को ही आजादी दिलाने वाली पार्टी के तौर पर स्वीकार किया।

जेपी के मन में कुछ निराशा पैदा हुई। उन्होंने विनोबा जी के साथ सर्वोदय का नया रास्ता अपनाया। आम चुनाव के बाद किसान मजदूर प्रजा पार्टी के नेता आचार्य कृपलानी, जो कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे थे, एमएन रॉय और सुभाष चंद्र बोस के अनेक समर्थक समूहों ने सोशलिस्ट पार्टी के साथ विलय कर सोशलिस्ट पार्टी को नई ऊर्जा दी।

डॉ लोहिया ने सोशलिस्टों की पहली बार केरल में बनी सरकार द्वारा गोली चलाने के बाद खुद ही चुनौती दे डाली। जिसके बाद पार्टी में पहला बड़ा बिखराव हो गया। यहीं जुड़ने और टूटने का जो सिलसिला समाजवादियों के बीच शुरू हुआ वह लगातार चलता रहा।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी समाजवादियों के बड़े समूह के तौर पर कार्य करती रही तथा डॉ लोहिया के नेतृत्व में समाजवादी संघर्ष करते रहे। बाद में दोनों दल फिर एकसाथ आए फिर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी बनी। इस बीच डॉ लोहिया ने कांग्रेस को हराने के लिए गैरकांग्रेसवाद की रणनीति बनाई। जिसके चलते पहली बार 7 राज्यों में गैरकांग्रेसी पार्टियों की संयुक्त सरकारें बनीं, हालांकि वे ज्यादा समय नहीं टिक सकी।

वर्ष 1974 में महंगाई के सवाल को लेकर छात्रों ने गुजरात और बिहार में आंदोलन शुरू किया। जो राज्य सरकारों के खिलाफ तेजी से आगे बढ़ा। जिसका नेतृत्व युवाओं द्वारा समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण को सौंपा गया। ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन द्वारा जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में रेल हड़ताल हुई, इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द कर दिया गया। उन्होंने देश में आपातकाल लागू किया। 19 महीने तक संपूर्ण विपक्ष के नेताओं को जेल में डाल दिया गया। समाजवादी भूमिगत रहकर तथा देश और विदेश में अलग-अलग तरीकों से इंदिरा गांधी की तानाशाही को चुनौती देते रहे। उसी समय बड़ौदा डायनामाइट कांड में जॉर्ज फर्नांडिस एवं अन्य साथियों को पकड़ा गया। अंततः चुनाव का ऐलान हुआ। समाजवादी नेता जेपी की प्रेरणा से जनता पार्टी का गठन हुआ, जिसने देश में लोकतंत्र बहाल किया।

1977 में बनी जनता पार्टी की सरकार ढाई साल ही चल सकी। जनता पार्टी भी बिखर गई लेकिन सोशलिस्टों ने सोशलिस्ट पार्टी के नाम से कोई पार्टी नहीं बनाई। समाजवादी जनता पार्टी, दमकिपा (दलित, मजदूर किसान पार्टी), लोक दल एवं अन्य छोटी-छोटी पार्टियां बनाकर कार्य करने लगे। 1989 में फिर समाजवादियों ने अगुवाई कर जनता दल का गठन किया। वीपी सिंह के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चे की सरकार बनी। लेकिन वह भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। इंद्र कुमार गुजराल, एचडी देवेगौड़ा और चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने परंतु जनता दल बिखर गया। 1992 में मुलायम सिंह ने फिर समाजवादी पार्टी का गठन किया, जो आज तक भारतीय राजनीति में अपना दखल बनाए हुए है लेकिन उसका प्रभाव उत्तर प्रदेश तक ही सीमित है। लालू यादव के नेतृत्व में 1997 में राष्ट्रीय जनता दल का गठन हुआ। शरद यादव के नेतृत्व में जनता दल (यू) का गठन 2003 में हुआ तथा 1999 में जनता दल (सेकुलर) का गठन देवेगौड़ा के नेतृत्व में हुआ। लेकिन यह सभी नवगठित दल मौका परस्त साबित हुए। सत्ता पाने के लिए इन्होंने समय पर विचारधारा से समझौता भी किया।

इसके अलावा भी देश में सोशलिस्ट फ्रंट, समाजवादी जन परिषद, सोशलिस्ट पार्टी (इंडिया), लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी, समाजवादी समागम आदि कई समाजवादी समूह कई राष्ट्रीय स्तर पर कई क्षेत्रीय दल के रूप में कार्य कर रहे हैं। अधिकांश पुराने तपे तपाए समाजवादी अब नहीं, कुछ का मुंह भंग हो गया। कुछ समाजवादियों ने राजनीतिक दलों का रंग ढंग देखकर अपनी निष्ठा बदल ली। बानगी के तौर पर प्रखर समाजवादी चिंतक चंद्रशेखर के पुत्र भाजपा से राज्यसभा सांसद हैं, बहू भाजपा से विधानसभा की प्रबल दावेदार हैं। जनता जनार्दन जनकवि गोरख को याद कर "समाजवाद ए बबुआ धीरे-धीरे आई"खुद को समझा-बहला रही है।

समाजवादी चंद्रशेखर की स्मृति को नमन।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 26

परीक्षाओं पर दिलाना होगा छात्रों को भरोसा

■ शिवनंदन लाल

शिक्षा से जुड़े मुद्दे भावनात्मक और राजनीतिक असर डालते हैं। पहले से ही नौकरी की कमी, बढ़ती प्रतियोगिता और कैरियर की अनिश्चिता ने युवाओं में असुरक्षा बढ़ाई है। नीट यूजी की परीक्षा रद्द होने के बाद देश की परीक्षा प्रणाली कटघरे में है। हालांकि सरकार डैमेज कंट्रोल के लिए तमाम एहतियाती कदम उठा रही है। सरकार ने जल्दी से जल्दी परीक्षा की नई तारीख घोषित करने, आवेदन शुल्क लौटने और परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को पसंदीदा शहर में केंद्र चुनने का विकल्प दिया है। ऐसे कदमों से सरकार यह बताना चाहती है कि वह छात्रों की परेशानी समझता है और समाधान के लिए भी गंभीर प्रयास कर रही है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि छात्रों का भरोसा कैसे लौटे?

मालूम हो कि पिछले 7 वर्षों में यानी वर्ष 2019 से लेकर 15 मई 2026 तक भारत में विभिन्न स्तरीय प्रतियोगी लगभग 70 परीक्षाओं के पेपर लीक हुए। आज तक किसी मामले की जांच पूरी नहीं हुई और ना ही किसी मामले में न्याय हुआ। प्रत्येक मामलों में छोटे स्तर के कर्मचारी पकड़े गए जिन्हें कुछ महीनो बाद जमानत मिल गई। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि क्यों नहीं दाखिला परीक्षा करने वाली एनटीए को उनकी जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया जाए? एनटीए पर यह भी आरोप है कि वह पुराने तौर तरीकों को अभी भी अपनाती है, वह अपने पुराने सिस्टम में कोई सुधार नहीं करती। इंटरनेट कंप्यूटर और एआई के जमाने में भी प्रश्न पत्र मुद्रित करके परीक्षा केदो तक पहुंचाने में विश्वास करती है। अगर हर हाल में ऐसा ही करना है तो क्यों नहीं प्रश्न पत्रों के अलग-अलग सेट तैयार करके अलग-अलग केदो को भेजा जाए, ताकि कभी इस तरह का हादसा होने पर पूरी परीक्षा रद्द न करनी पड़े। कोई अनहोनी होने पर केवल चिन्हित केदो पर ही दोबारा परीक्षा कराई जाए।

एनटीए का गठन 2017 में हुआ था। तब से लेकर आज तक इस संस्था की विश्वसनीयता सवालों के घेरे में रही। 5 में 2024 को भी जब इसी नीट परीक्षा में गड़बड़ झाला हुआ तो मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था। तब संस्था ने भविष्य में इस तरह की गलती दोबारा न करने का आश्वासन न सिर्फ अदालत को बल्कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को भी भरोसा दिया था। आलम यह है कि 2 साल बीतते बीतते उससे भी बड़ा कांड उजागर हो गया। पिछली दफा एजेंसी ने कई छात्रों को पूरे पूरे 720 नंबर दे डाले थे जबकि वे छात्र पढ़ने में सामान्य से भी कमजोर थे। इस बार तो देश के विभिन्न शहरों में प्रश्नपत्र घूमते रहे। वाजिब खरीदार खोजते रहे।

एनटीए ने अपने पहले सफाई में कहा है कि प्रश्न पत्र प्रिंटिंग प्रेस से लीक हुए जबकि सभी जानते हैं, जहां पेपरो की छपाई होती है वहां परिंदा भी पर नहीं मार सकता। वह बेहद गुप्त स्थान होता है और वहां कर्मचारियों को फोन रखने तक की इजाजत नहीं होती। तो जाहिर सी बात है कि इस तरह के कांड में पूरा का पूरा सिंडिकेट शामिल होता है। अब समय आ गया है कि सरकार इस तरह के गिरोह का पर्दाफाश करें तथा उन्हें कड़ी सजा दे ताकि भविष्य में छात्रों के साथ फिर ऐसा कोई खिलवाड़ ना हो।

इस पूरे प्रकरण में विपक्ष को बैठे बिठाये एक मुद्दा हाथ लग गया है। इसके बहाने विपक्ष सरकार को लगातार घेर रहा है तथा सरकार

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 27

की पूरा शिक्षा पद्धति पर सवालिया निशान खड़ा कर रहा है। इस बार 12वीं की कॉपियों की जांच में अपनाई गई ऑन स्क्रीन मार्किंग पद्धति भी सवालों के घेरे में है। इसके अलावा एनसीईआरटी की किताबों से जुड़े विवाद, विश्वविद्यालय में जातिगत भेदभाव को रोकने वाले नए नियमों पर रोक और शिक्षा नीति से जुड़े कुछ अन्य फैसले भी सरकार के लिए शुभ नहीं रहे। विपक्ष और अनेक शिक्षाविद लगातार निशाना साधते रहे हैं।

ऐसे में सिर्फ परीक्षा की नई तारीख घोषित करने और फीस लौटाने से विश्वास की बहाली पूरी तरह से संभव नहीं है। सरकार को पेपर लीक, तकनीकी गड़बड़ी, मूल्यांकन विभाग और प्रशासनिक लापरवाही पर ठोस कार्रवाई के साथ आगे आने होगा। शिक्षा व्यवस्था में लगे घुन को खत्म करने के लिए पारदर्शिता बढ़ानी होगी जवाबदेही तय करनी होगी। सरकार को आगे जाकर हस्तक्षेप करना ही होगा क्योंकि लंबी चुप्पी से बात नहीं बनेगी। छात्र और उनके अभिभावक

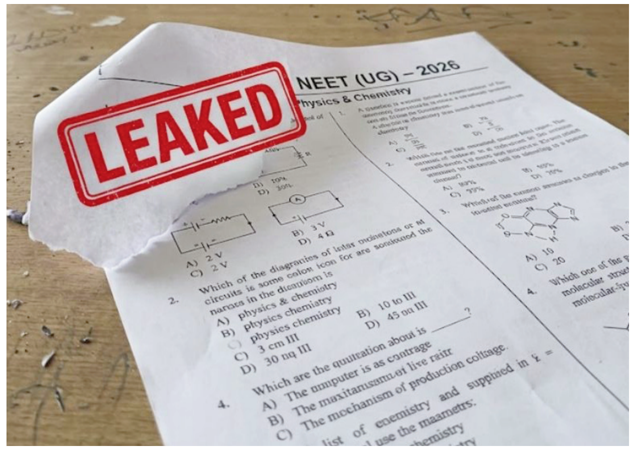

सिर्फ सरकार से उम्मीद रखते हैं, उनकी उम्मीदें ना टूटे इसका ख्याल सरकार को रखना ही होगा क्योंकि एक बार भरोसा अगर टूट जाए तो उसे वापस लाना किसी के लिए भी कठिन काम होता है।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:54 AM Page 28

नाम : आजाद
पिता: स्वाधीनता
माता : भारत माता

सन् 1919 में जनरल डायर ने अमृतसर (पंजाब) के जलियांवाला बाग में कहर ढाया और निहत्थे लोगों को गोलियों से भून डाला। 13 वर्ष की अवस्था में चन्द्रशेखर को पूरी तरह झकझोर कर रख दिया।

हिमांशु जयहिंद

1921 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में चन्द्रशेखर ने भाग लिया और इस विद्रोह के लिए मात्र पंद्रह वर्ष की अवस्था में उसे कठोर सजा सुनाई गई। जज ने जब पूछा-

'तुम्हारा नाम'

– 'आजाद'

'पिता का नाम'

'स्वाधीनता'

– 'माता का नाम'

– 'भारत माता' चन्द्रशेखर ने जवाब दिया।

इस बेअदबी के लिए उसे 15 बेंतों की सजा सुनाई गई। बेंत की हर एक चोट उसकी चमड़ी उधेर देती थी किन्तु उसके मुंह से आह नहीं निकला। बेंत की हरेक चोट पर 'भारत माता की जय' की हुंकार सुनाई दी। इस घटना के बाद चन्द्रशेखर तिवारी को देशवासी चन्द्रशेखर आजाद के रूप में जानने लगे। इस घटना के बाद तो जैसे उनकी राष्ट्र भावना को पंख लग गए। उन्होंने अपने आप को आजाद घोषित किया- 'मैं आजाद हूँ! फिरंगियों मैं तुम्हारे कब्जे में जीते जी नहीं आ सकता।"

आजाद का नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। उनका जन्म-23 जुलाई 1906 ग्राम-भावरा, जिला-झबुआ, मध्यप्रदेश में हुआ था। उनके पिता-पं. सीताराम तिवारी बड़े धर्म परायण ब्राह्मण थे और माता-जगरानी देवी अपने पुत्र से बहुत स्नेह रखती थी। इनकी प्राथमिक शिक्षा भावरा, उच्च शिक्षा-संस्कृत पाठशाला, वाराणसी में सम्पन्न हुई थी। पडित जी, चन्द्रशेखर आजाद, 1857 के गदर के बाद गरम दल के संस्थापक प्रथम भारतीय क्रान्तिकारी जिसने ब्रिटिश राज के खिलाफ आजादी के लिए अस्त्र उठाया। एक कर्तव्यपरायण ब्राह्मण जिसका विश्वास था कि दूसरे की भलाई के लिए हथियार उठाना ही देशभक्त सिपाही का धर्म है।

आजाद ने 'हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' नाम से क्रान्तिकारी दल का निर्माण किया 'पूर्ण स्वाधीनता' इस दल का मुख्य उद्देश्य था। भगत सिंह, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त और राजगुरू चाहते थे कि सामाजिक सिद्धान्त पर आधारित नये भारत का निर्माण हो। आजाद और सहराष्ट्रभक्तों ने ब्रिटिशराज के विरूद्ध कई हिंसक गतिविधियों की योजना बनाई और उसे क्रियान्वित किया। सन् 1926 में काकोरी ट्रेन डकैती और वायसराय के ट्रेन को उड़ाना, सन् 1928 को लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए लाहौर में जॉन पॉयान्ट्ज सांडर्स को गोली मारना आदि के कारण आजाद ब्रिटिश राज को बुरी तरह खटकने लगे। ब्रिटिश पुलिस ब्रिगेड उनके नाम से ही कांप जाती थी। अंग्रेजी पुलिस उन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ना चाहती थी। आजाद ने प्रतिज्ञा की थी कि वह आजाद रहेंगे और जीते जी कभी अंग्रेजों के हाथ नहीं आयेंगे। उनका कहना था कि जब तक उनके हाथ 'बमतुलबुकारा (पिस्टल) रहेगा तब तक कोई उन्हें जिन्दा नहीं पकड़ पायेगा।

27 फरवरी 1931 के दिन आजाद सुखदेव, वीरभद्र और पृथ्वीराज से अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में मिलकर संस्था के कार्य को आगे बढ़ाना चाहते थे। रूस जाने की योजना बनानी थी। रूस में कामरेडों से मिलकर भारत में क्रान्ति को आगे बढ़ाने का कार्यक्रम तय करना था। उस समय वह इलाहाबाद के झूसी एरिया में रहते थे। वीरभद्र तिवारी पूर्ववर्ती संगठन का सदस्य था और पार्क में भी आजाद के साथ था। किन्तु पुलिस के आने से थोड़ी देर पूर्व ही वीरभद्र तिवारी किसी से मिलने जाने का बहाना बनाकर वहां से रफूचक्कर हो गया। तिवारी ने पैसे की लालच में पुलिस की मुखबिरी कर चन्द्रशेखर आजाद को

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 29

धोखा दिया। चन्द्रशेखर के पार्क में आने के बाद पुलिस ने चारो तरफ से घेर लिया और गोलियां बरसानी शुरू कर दी। सुखदेव, पृथ्वीराज और आजाद घिर गए। सुपरिन्टेंडेंट ने चन्द्रशेखर को अपने दोनों हाथ ऊपर कर के बाहर आने को कहा। आजाद के पिस्टल से निकली गोली सुपरिन्टेंडेंट की बांह को चिरती हुई निकल गई और वह नीचे गिर पड़ा। फिर तो पुलिस ने अंधाधुंध फायरिंग शुरु कर दी। आजाद ने सुखदेव और पृथ्वीराज को कवर देकर बचने का रास्ता बनाया और उन्हें सुरक्षित निकल भागने को मजबूर किया। अकेले जुझते रहे और तीन पुलिस वालों को मार गिराया। एक गोली सनसनाती हुई आई और उनकी जाँघ में धंस गई। पैर बेकार हो गया। वह घायल हो गए किन्तु मुकाबला करते रहे। जब सारी गोलियां खत्म हो गई और बचने या भागने का कोई उपाय नहीं बचा तो अंतिम गोली उन्होंने अपनी कनपटी में उतार ली। जब तक जिया आजाद जिया और मरा तो आजाद मरा। कहते हैं कि बीस मिनट तक किसी पुलिस वाले की हिम्मत नहीं हुई कि उसके मश्त शरीर के पास जायें। सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव जैसे साहसी और धीर वीर क्रान्तिकारी तैयार करने वाले क्रान्ति गुरू चन्द्रशेखर आजाद भारत माता की गोद में सदा के लिए सो गये। अल्फ्रेड पार्क का वह प्राचीन पेड़ आज भी खड़ा है। आजाद की अचूक निशानेबाजी और अकेले अंग्रेजी फौज को धूल चटाने वाले वीर योद्धा की वीरता की कहानी मूक शब्दों में बयान करता है। वह चाहते तो खुद को बचा सकते थे। किन्तु नहीं, वे एक अच्छे साथी भी थे जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए सुखदेव और पृथ्वीराज की रक्षा की। हरेक हिन्दुस्तानी के दिल में त्याग और बलिदान का एक जज़्बा पैदा किया जो एक मिशाल है और युवा वर्ग के लिए अनुकरणीय भावमय संदेश है अपने लिए जिया तो क्या जिया ! अपनो के लिए जियो और मातृभूमि की आन के लिए मरो। वह अंतिम गोली थी जो आजाद के पिस्टल से निकली और आजाद की कनपटी को विदीर्ण करती चली गई। उनकी मरते दम तक आजाद रहने की कसम पूरी हुई। चन्द्रशेखर पहले और अंतिम क्रांतिकारी हुए जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आजाद शामिल हुए और आजाद रहे। यह कतई पसंद नहीं था कि ललमुंहे अंग्रेज बन्दरों की रस्सी में एक क्रान्तिकारी जिंदादिल शेर बँधे और उनके इशारों पर नाचे। उनकी वह आवाज आज भी भारत की फिजाओं में गूंजती है-

"दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे !"

दस साल बाद 1941 में चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह के पदचिन्हों पर चलने वाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटिश राज की नींव हिला दी। आजाद उन तरुणों में से एक थे जो महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित थे और उसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिए किन्तु 1922 में चौरी-चौरा कांड जिसमें 22 पुलिस वाले आंदोलनकारियों द्वारा मारे गए, गांधी जी ने आंदोलन को विराम दे दिया था। देश के नवयुवक जालियांवाले कांड से बेहद क्षुब्ध थे और अंग्रेजों से बदला लेना चाहते थे। वे हिंसा को गलत नहीं मानते थे।

झांसी से 15 कि.मी. दूर सतार नदी के किनारे ओरछा के जंगल में उसने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू की। हनुमान मंदिर के पास उसने एक कुटिया बनाई और उसमें पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी के नाम से भेस बदल कर रहते रहे। वहीं उसने गोली चलाने का अभ्यास किया। वह बहुत अच्छे निशानेबाज हुए और संस्था के साथियों को गोली चलाना सिखाया। पास के गांव धीमरपुरा जो आज आजादपुरा है में बच्चों को पढ़ाने का काम करते रहे और काफी प्रतिष्ठा पाई। बुंदेलखण्ड मोटर गैरेज सदर बाजार से मोटर चलाना सीखा। सदाशिव राव मल्कापुरकर, विश्वनाथ वैशम्पायन, भगवानदास महुर आदि उनके समूह में शामिल हुए। कांग्रेस नेता पं० रघुनाथ विनायक धुलेकर और पं० सीताराम भास्कर भागवत आजाद के करीबी सहयोगी हुए। झांसी चन्द्रशेखर आजाद के लिए सर्व सुरक्षित जगह थी।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना सचिन्द्रनाथ सान्याल ने 1923 में की गई थी। काकोरी ट्रेन रॉबरी के केश में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्लाह खान, ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी दी गई। सुन्दरलाल गुप्ता और चन्द्रशेखर आजाद वहां से भाग निकले थे और भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू के साथ उन्होंने 1927 में 'हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' की स्थापना की थी।

वर्षो के संघर्ष, हत्याओं और आत्मबलिदानों का सिलसिला, अंग्रेजों के छापे, आंदोलनकारियों का प्रदर्शन और अनगिनत कुर्बानियों के बाद आजादी मिली किन्तु चन्द्रशेखर आजाद ने जो राह दिखाई, उस पर चलने वाले गरम दल के आंदोलनकारियों ने दुश्मनों के भीतर जो खौफ पैदा की उससे उनकी रूहें कांपती थीं।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 30

तकनीक ने हमें दिया है बहुत कुछ, लेकिन धीरे-धीरे छीन रही है सब कुछ

नांदिक दूसरा दर्जा पास कर कक्षा तीन में पहुंचे हैं और कुंज अब छठवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं। आदर्श विद्यार्थी का लक्षण पूछने पर तोते की तरह सुनाते हैं "काग चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च। अल्पाहारी, गृह त्यागी पंच लक्षणम विद्यार्थिन। लेकिन व्यवहार में ऐसा है नहीं। तकनीक का असर- कुअसर उनके भी बाल मन पर पड़ा है। खुद से मेहनत कर सोचने समझने और प्रश्नों का उत्तर तलाशने की बजाय गैजेट का सहारा लेने की ओर झुकाव है।इस बात की तस्दीक एक दिन नांदिक ने मुझसे की, उसने कहा, "कुंज भैया ने गूगल से देखकर सवाल का उत्तर निकाला है"।

संजय जयहिंद

यहां प्रश्न नकल का नहीं है, क्योंकि नकल भी अक्ल वाले ही कर पाते हैं। यहां सवाल तकनीक के बेजा इस्तेमाल का है। दरअसल तकनीक का विकास सहयोग और सार्थक के लिए समय बचाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्राचीन समय में यूनान के दार्शनिक अरस्तू ने दासों की व्यवस्था को जायज ठहराया था और कहा था कि दासों के कारण बुद्धिमान लोग श्रम से बचते हैं तथा उनका समय अनुसंधान के लिए उपयोग में आता हैं। बदलते समय के साथ अब दास प्रथा अमानवीय कृत्य है।

तकनीक का विकास भी मनुष्य के समय सहयोग के लिए ही है, लेकिन जब मनुष्य तकनीक पर निर्भर होता जाएगा, तकनीक का गुलाम बनता जाएगा, तो भविष्य में समाज यह सोचने के लिए बाध्य हो सकता है की क्या यह भी एक अमानवीय कृत्य है? डर यह भी है कि समय बचाने के नाम पर विकसित तकनीक कहीं प्राकृतिक समझ और नैसर्गिक मेधा को ही कुंद न कर दे?

इसमें कोई दो राय नहीं कि तकनीक और प्रौद्योगिकी के बल पर आज दुनिया विकास के चरम पर चढ़ने को तैयार खड़ी है। ब्रह्मांड के अनसुलझे रहस्यों को खोजने के साथ-साथ दूसरे ग्रहों की यात्रा विज्ञान के बल पर बेधड़क हो रही है। लेकिन कहते हैं ना कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। तकनीक का एक पक्ष उजला है तो दूसरे से कुछ धुंधले की भी झलक मिल रही है। अभियांत्रिकी और तकनीक के बल पर प्रौद्योगिकी के विकास ने हमारे हाथ में ऐसे कई गैजेट्स दिए हैं, जो ना केवल हमारे जीवन को सरल बनाते हैं बल्कि हमारे कार्य करने की क्षमता, उत्पादकता और गति को भी बढ़ाते हैं।

आज के समय में कुछ गिनती के लोग ही ऐसे होगे जो स्मार्टफ़ोन, लैपटॉप, वाई-फाई, 5जी, 4जी, एसी, हीटर के बिना अपनी ज़िंदगी बिता रहे हो। आजकल तो कई घर में होम ऑटोमेशन और स्मार्ट होम बन गए हैं और इसी वजह से घर के वातावरण में कई प्रकार की रेडियो वेव्स और कई तरह की तरंगे व्याप्त होती हैं, जो हमारे शरीर के लिए बिलकुल भी अच्छी नहीं हैं।

हर चीज़ की तरह टेक्नोलॉजी के भी हमारे जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं। टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन जीने के तरीके तक को बदल के रख दिया है। हम टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल अपने काम को आसान और समय की बचत करने के लिए करते हैं।

कभी सोचा है कि आज से बीस साल पहले का जीवन टेक्नोलॉजी के बिना इतना सरल नहीं था जितना की आज है? आज आप अपने दोस्त से बोलिए कि इंटरनेट हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। वह पहले अपनी हंसी रोकेगा फिर आपकी बात को मजाक समझ कर यकीन भी नहीं करेगा और शायद कोई भी आपकी बात पर यकीन नहीं करेगा।

यह इक्कीसवीं सदी है और इंटरनेट का इस्तेमाल सभी को करना आता है, और इसका लाभ लोग अपनी जीवन शैली को आसान बनाने के लिए करते हैं। हम टेक्नोलॉजी की मदद नई स्किल्स सीखने के लिए, मीलों दूर बैठे अपने दोस्त से बात करने के लिए, पैसे को आसानी से ट्रांसफर करने के लिए, शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया सीखने के लिए, और अपनी जीवन शैली को बेहतर बनाने के लिए करते हैं।

प्रौद्योगिकी विकास का ही नतीजा है कि आज स्वास्थ्य सुविधाओं में बेमिसाल परिवर्तन आया है और गंभीर से गंभीर बीमारियों का इलाज आज पलक झपकते ही हो जाता है।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 31

दुनिया भर में किसी भी जगह आप बस बैठे-बैठे हजारों मिल दूर रह रहे किसी भी व्यक्ति से बात कर सकते हैं।

दुनिया में सबसे शक्तिशाली देशों में उन देशों का नाम शामिल है, जिनके पास सशस्त्र बल और एडवांस टेक्नोलॉजी है।

व्यवसाय चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे चलाने के लिए टेक्नोलॉजी की मदद लेनी ही पड़ती है।

प्राचीन समय और आज के समय का विश्लेषण करने पर पता चलता है की तकनीक के बल पर मानव जाति ने अपार प्रगति की है। अगर हमें टेक्नोलॉजी का वरदान ना होता तो हम शायद अब भी कबीलों और जंगलों में निवास कर रहे होते।

टेक्नोलॉजी हमारे लिए एक आशीर्वाद है, पर जरूरत से ज्यादा किसी भी चीज को इस्तेमाल में लाना अपने साथ कई नुकसान को लेकर आता है। टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन को संभल तो दिया है लेकिन नकारात्मक रूप से भीतर तक प्रभावित किया है?

वर्तमान में टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ी है। यह सिर्फ बड़ी ही नहीं है बल्कि धीरे-धीरे हाबी हो रही है।

किसी भी चीज की अधिकता सही नहीं है, चाहे वह अमृत ही क्यों न हो। तकनीकी पर पूरी तरह से निर्भर होना, एक बुरा संकेत है। आज आलम यह है कि हम अपने दिन की शुरुआत टेक्नोलॉजी से शुरू करते हैं और टेक्नोलॉजी पर खत्म करते हैं। हम अलग -अलग तरीके के गैजेट्स से घिरे हुए हैं।

फोन, लैपटॉप, केटल्स, वाटर हीटर, टोस्टर, कार,आदि। हम टेक्नोलॉजी पर इतने निर्भर हो गए हैं कि गैजेट्स के इस्तेमाल ने हमें आलसी बना दिया है। हम खुद से कुछ करना ही नही चाहते, क्योंकि हमारे काम को पूरा करने के लिए गैजेट्स मौजूद हैं। टेक्नोलॉजी पर निर्भर होने की वजह से हमारा शरीर बीमारी का घर बन गया है। हम दिन-ब-दिन आलसी बनते जा रहे हैं और इसके साथ-साथ मोटापा, तनाव और स्ट्रेस जैसी अनेक बीमारियों से घिरते जा रहे हैं।

टेक्नोलॉजी ने ही हमें एक महत्वपूर्ण चीज दी है – सोशल मीडिया। लैपटॉप और फोन में अलग-अलग ऐप की मदद से लोग किसी भी अनजान व्यक्ति से बात कर सकते हैं। वर्चुअल दुनियां में दोस्त बनाने के कारण लोगों के बीच आज सामाजिक अलगाव बढ़ रहा है। आज हमारे लिए किसी अनजान व्यक्ति से बात करना तो आसान है, पर हम पड़ोस में रहने वाले लोगों से बात नहीं करना चाहते। सिर्फ चैटिंग ही नहीं, आज कल लोग वीडियो गेम्स खेलने में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें पता ही नहीं है कि दुनिया में क्या हो रहा है।

छात्रों पर इसका सीधा नकारात्मक प्रभाव पढ़ रहा है। टीचर ने ऑनलाइन क्लास में एक चैप्टर खत्म कर दिया और गृह कार्य भी दे दिया। टीचर ने कह दिया कि कोई भी गृह कार्य नकल करके नहीं करेगा, सबको खुद से मेहनत करके काम को पूरा करना है। लेकिन छात्र इस बात को नहीं मानते हैं क्योंकि उनके पास तो इंटरनेट है।

उनके पास तो विकल्प है कि वह इंटरनेट की मदद से चुन सकते हैं कि वह कौन से साइट से अपना गृहकार्य अपनी कॉपी पर उतारेंगे। इससे यह देखने को मिला है कि छात्र महत्वपूर्ण ज्ञान लेने से वंचित रह जाते हैं। वह किसी भी चीज को कॉपी करना पसंद करते हैं, और बाकी समय वह गेम्स और चैटिंग में बिता देते हैं।

तकनीक के आने से बेरोजगारी की दर में लगातार वृद्धि हो रही है। पहले जिस काम को करने के लिए मानव की जरूरत पड़ती थी, आज वह सारे काम रोबोट्स कर रहे हैं। लोग मशीन को इस्तेमाल में लाना पसंद कर रहे हैं, क्योंकि यह उनका समय और खर्च दोनों बचाती है। नौकरियों की संख्या कम होने की वजह से बेरोजगारी में इज़ाफा हो रहा है। टेक्नोलॉजी की लत से लोगों की दिनचर्या बदल रही है।

लोग अपना समय मनोरंजन को ज्यादा दे रहे हैं। वीडियो गेम्स, नेटफ्लिक्स, स्मार्टफोन, लैपटॉप और भी कई गैजेट को ज्यादा इस्तेमाल में लाने की वजह से हमें टेक्नोलॉजी की लत लग गई है। हम टेक्नोलॉजी के आदी हो गए हैं और इसके बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

यूं तो टेक्नोलॉजी हमारे समय को बचाने का काम करती है लेकिन लोग अपने कंप्यूटर्स पर घंटों बिताते हैं और मूवीज देखना, टेक्सटिंग, वीडियो गेम्स आदि काम करते हैं। इन सब में वह इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपने जरूरी काम को करना भूल जाते हैं।7-जब मशीनें नहीं हुआ करती थीं तब हम सब स्वयं के मस्तिष्क का उपयोग करके किसी भी काम को किया करते थे लेकिन आज हम आसान से आसान काम को टेक्नोलॉजी की मदद से करते हैं तो भला स्वयं के मस्तिष्क का उपयोग कैसे ही संभव हो पाएगा।

भले ही मशीन ने हमारे काम को आसान बनाया है और ये हमें बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन अपनी बुद्धि का प्रयोग करना भी बेहद ज़रूरी है। अगर हमनें इसी तरह हर काम को करने के लिए मशीन की मदद ली तो यह धीरे-धीरे हमारी रचनात्मकता को नष्ट कर देगा।

साइबर बुलिंग, हैकिंग, ट्रॉलिंग, स्टॉकिंग इत्यादि डिजिटल अपराध का एक स्वरूप है, जिसे टेक्नोलॉजी की आड़ में अंजाम दिया जाता है। प्रौद्योगिकी के बढ़ते स्वरूप के साथ ही ऐसे अपराधों में भी बढ़ोतरी हुई है। सिर्फ इतना ही नहीं टेक्नोलॉजी की वजह से दुर्घटनाएं, गोपनीयता और असुरक्षा, टेक्नोलॉजी की लत, खराब पॉश्चर, याद्दाशत कम होना, आदि नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। अब समय आ गया है कि हम टेक्नोनॉलोजी का उतना ही इस्तेमाल करें जितनी हमें जरूरत है।

कुल मिलाकर हम सब टेक्नोलॉजी के मालिक है और टेक्नोलॉजी हमारी गुलाम है लेकिन दुख की बात ये है कि टेक्नोलॉजी पर हम इतने अधिक आश्रित हो गए हैं कि टेक्नोलॉजी हमें कंट्रोल करने लगी है।

हम जीते जागते इंसान हैं, कोई रोबोट नहीं इसीलिए टेक्नोलॉजी की उतनी ही मदद लें, जितनी ज़रूरत हो। अगर मालिक नौकर के गुलाम बन जायेंगे तो पूरी व्यवस्था की गड़बड़ा जाएगी इसीलिए टेक्नोलॉजी से बस काम भर की ही मदद लें।

शेर और शहर

मानव सभ्यता का निरंतर विकास हुआ है, भले ही उसकी गति धीमी हो किंतु निरंतर विकासशील रही है। लेकिन इसी विकास की चकाचौंध में भागते लोग एक स्वार्थी और हिंसक शेर के समान बन गए हैं। जहां शेर जंगल का राजा होता है और एक राजा का कर्तव्य होता है अपनी प्रजा की रक्षा करना लेकिन यहां शेर रूपी शहर अपनी प्रजा की रक्षा नहीं अपितु शोषण कर रहा है। आजकल यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार शहर, शेरों का जंगल बन चुके हैं और यहां शेर जंगल के राजा के साथ-साथ शिकारी भी है। वह शक्ति, आक्रामकता और सर्वाइवल ऑफ द फिट्टेस्ट का प्रतीक है। शहर आज वह कंक्रीट जंगल बन चुका है, जहाँ कॉर्पोरेट टाइकून, बिलियनेयर और राजनीतिक-आर्थिक अभिजात वर्ग जैसे कुछ शेर मुनाफे के लिए लाखों-करोड़ों आम लोगों का शिकार करते हैं।

गौरी तिवारी

यहां सामूहिक भलाई की आड़ में व्यक्तिगत लालच की बात की जाती है। आज के समय में पूंजी का संकेंद्रण है, जो शक्ति का संकेंद्रण पैदा करता है। शहर इस प्रक्रिया का केंद्र इसलिए बनते हैं क्योंकि शहरों में रियल एस्टेट, स्टॉक मार्केट, बैंकिंग, उद्योग और उपभोक्ता बाजार केंद्रित होते हैं। परिणामस्वरूप, शहर शोषण और असमानता का प्रतीक बन जाते हैं। हम देख सकते हैं कि गांव का एक गरीब किसान साल भर कितनी मेहनत करके फसल तैयार करता है लेकिन उसे उस फसल और सब्जियों का उतना मूल्य भी नहीं मिलता जितनी उसकी लागत लगती है, एक कुंटल का भाव मात्र 1000 रुपए दिया जाता है लेकिन वही सब्जियां और अनाज जब शहर में बेचे जाते हैं तो बिचौलिए उसके दस गुने दाम पर बेचते हैं और जो आलू गांव का गरीब किसान 2 रूपये किलो पे बेचता है उसे शहर में 20 रुपए किलो की कीमत पर बेचा जाता है। उस गरीब किसान के पास फसल उगाने

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 33

हेतु लिए गए क़र्ज़ को चुकाने तक के पैसे नहीं बचते और जो किसान कई कुंटल सब्जियां और अनाज उगा रहा है उसका परिवार भूखे सोता है। गरीबी और कर्ज चुकाने की चिंता में कई किसान आत्महत्या तक करने पर मजबूर हो जाते हैं। आज के आधुनिक युग में शहर पूंजी के संचय का सबसे बड़ा मैदान है। लेकिन यदि गौर किया जाए तो यह सामने आता है कि इस संपत्ति का संचय दूसरों की बेदखली द्वारा किया गया है। जहां एक ओर बिलियनेयरों की संपत्ति में इतनी तेजी से वृद्धि हो रही है वहीं दूसरी ओर विश्व के अरबों गरीब लोग हैं जिनकी कुल संपत्ति भी इन बिलेनियरों की संपत्ति की बराबरी नहीं कर सकती। यही असमानता की एक अदृश्य रेखा है जिसकी मुख्य भूमिका शहर निभाते हैं। मुंबई, दिल्ली-ऐनसीआर, बेंगलुरु जैसे भारतीय महानगरों में एक तरफ अंबानी का एंटीलिया या गेट्स जैसे बिलियनेयरों की संपत्ति है, तो दूसरी तरफ लाखों लोग स्लम में रहते हैं। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार, भारत के प्रमुख शहरों में लगभग आधी शहरी आबादी स्लम में रहती है। मुंबई, दिल्ली और कोलकाता जैसे शहरों के स्लमों में पानी, स्वच्छता, स्वास्थ्य सुविधाएँ बेहद अपर्याप्त हैं यहां लोगों को पानी भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता जिसके कारण वहां रह रहे लोगों को कई बीमारियां हो जाती हैं जिनके इलाज बिना उनकी मृत्यु हो जाती है।

इस चेन को इस प्रकार से समझा जा सकता हैः

शहर का अदृश्य जाल निजी मुनाफा भूमि और संसाधनों का निजीकरण गरीबों का विस्थापन स्लम विस्तार।

बिल्डर और कॉर्पोरेट शेर इन शहरों में जमीन हड़पते हैं, हाई-राइज बनाते हैं और गरीबों को किनारे कर देते हैं। इन लोगों द्वारा भारत के लोगों के लिए ऐसे प्रोजेक्ट्स बनाए गए जिसके नाम पर लाखों किसानों और मजदूरों को विस्थापित किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि शहरी गरीबी बनी रही, जबकि अमीरों की संपत्ति आसमान छू गई। आई.टी. हब बेंगलुरु या गुरुग्राम में लाखों युवा "कॉर्पोरेट स्लेव्स" बनकर बर्नआउट और डिप्रेशन झेलते हैं। इसके साथ ही एक ऐसी मुक्त बाजार प्रणाली भी बहुत प्रसिद्ध हो रही है जिसमें पारंपरिक पूर्णकालिक नौकरियों के बजाय अल्पकालिक या फ्रीलांस अनुबंधों पर काम किया जाता है जैसे ऊबर, जोमैटो, स्विगी जैसी कंपनियों ने लाखों युवाओं को अस्थिर रोजगार में धकेल दिया। इनमें जो लोग डिलीवरी डिलीवरी देने आते हैं वे सीधे रूप से इन कंपनियों के मालिकों यानी शेरों के शिकार बन जाते है क्योंकि इन्हें इनकी नौकरी के लिए कोई सुरक्षा और कोई लाभ नहीं मिलता। इनका शोषण किया जाता है।

शहरों में मॉल, लक्जरी ब्रांड और सोशल मीडिया "खरीदो और खुश रहो" का नारा देते हैं, लेकिन वास्तव में यह मानसिक तनाव बढ़ाता है। अक्सर अखबारों में खबर छपती है कि शहरी क्षेत्रों में डिप्रेशन और चिंता की दर ग्रामीण क्षेत्रों से दोगुनी है। प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र है कि इंसान इंसान का शत्रु बन जाता है – हर कोई सिर्फ अपने बारे में सोचता है, स्वार्थ के कारण वह स्वः तक सिमट कर रह गया है। यह ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार शेर के जंगल में कमजोर का कोई स्थान नहीं। शहरों में निजी अस्पताल मुनाफा कमाते हैं, जबकि सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था ध्वस्त है। कोविड महामारी के समय शहरों (विशेषकर झुग्गियों) में गरीबों की मौत दर ज्यादा थी, क्योंकि शहरी पूंजीवाद ने स्वास्थ्य सेवाओं को लाभ का साधन बना रखा था।शहरों का यह आक्रमण एक पर्यावरणीय विनाश का स्वरूप भी ले सकता है क्योंकि शहरों में प्रदूषण, ट्रैफिक, जल संकट, ग्लोबल वार्मिंग ये भी अपने चरम पर हैं।

बिल्डरों ने अपने मुनाफे के लिए हरे क्षेत्रों को कंक्रीट में बदलना शुरू कर दिया है बिना यह सोचे कि उसका कितना दुष्परिणाम हो सकता है क्योंकि उनके लिए मुनाफा पहले, पर्यावरण बाद में है।आधुनिकता और विकास की इस दौड़ में शहर अपने मुनाफे के लिए गरीब किसान और गांवों का शोषण करता जा रहा है जिसके कारण एक तबका अमीर बनता जाएगा और एक तबका उतना ही गरीब। हमें यह समझना होगा कि जब तक हम स्वः से हटकर सर्वोदय भावना नहीं जगाएंगे तब तक शहर शोषणकर्ता और गांव शोषित वर्ग ही बनके रह जाएंगे।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 34

जीत का फार्मूला बन गई है मुफ्त की रेवड़ी?

देश में जब भी कोई चुनाव आता है तो आधी आबादी को और अधिक सशक्त करने का दावा करते हुए तरह-तरह की रेवड़िया बांटने का दौर शुरू हो जाता है। इस रेस में कोई दल पीछे नहीं रहना चाहता। जलसे आयोजित कर एक से बढ़कर एक घोषणाएं होने लगती है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने पहले से चल रही लक्ष्मी भंडार योजना की धनराशि बढ़ाने की बात कही है, तो बंगाल में अपना रसूख फिर से लौटने का राह देख रही कांग्रेस महिलाओं को 2000 मासिक सहायता देने का वादा कर रही है। मुफ्त बांटकर महिलाओं को अपने पाले में करने का आलम यह है कि कुछ समय पहले बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे का उद्घाटन करते वक्त देश को मुफ्त की रेवड़ी से दूर रहने की नसीहत देने वाले देश के प्रधानमंत्री (भाजपा के स्टार प्रचारक) नरेंद्र मोदी रविवार को बंगाल की एक चुनावी सभा में थे जहां उन्होंने मंच से ऐलान किया कि महिलाओं को हर साल 36000 रुपए नकद, बेटियों की शिक्षा के लिए 5000 रुपए तथा खेती में लगी महिलाओं को किसान निधि से अलग 9000 सालाना की रकम देकर उन्हें सशक्त बनाया जाएगा।

राजेश डोबरिलया

फिलहाल दो राज्यों पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में मतदान होना है। इन दोनों ही राज्यों में महिला मतदाता नतीजों को प्रभावित करने की स्थिति में है। बंगाल में अभी एसआईआर को लेकर विशेष अपीलेट ट्रिब्यूनल में सुनवाई चल रही है और मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक महिला मतदाता पुरुषों के लगभग बराबर हैं। वहीं तमिलनाडु में महिला मतदाताओं की संख्या 51% है, जबकि पुरुष मतदाता 49% ही हैं। पश्चिम बंगाल की तीन करोड़ 40 लाख महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए सशक्तिकरण के नाम पर खजाना खोल हर संभव कोशिश की जा रही है।

राजनीतिक पंडितों का तो यहां तक मानना है की दोनों राज्यों की महिला मतदाताओं को ध्यान में रखते हुए ही सत्ताधारी दल द्वारा संसद का विशेष सत्र आहूतकर महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए आनन फानन में मन माफिक संशोधन के साथ महिला आरक्षण बिल प्रस्तुत किया गया था। उम्मीद की जा रही थी की बिल पारित होने पर महिलाएं बिल पारित कराने वाली पार्टी के पक्ष में एकमुश्त मतदान कर शुक्रिया अदा करेंगी। पार्टी की ओर से भी इस लाइन पर प्रचार प्रसार करने की रणनीति तैयार की गई थी। लेकिन चौकन्ने विपक्ष की एकजुट रणनीति के कारण संसद द्वारा प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। फिर क्या था ेचित्त भी मेरी और पट भी मेरीे को चरितार्थ करते हुए संसदीय आपदा को अवसर में बदलने की कवायद शुरू हुई। छात्र आंदोलन, किसान आंदोलन, उग्र आतंकी घटनाओं, गलवान घाटी प्रकरण, मणिपुर हिंसा, मनमाना अमेरिकी टैरिफ, ट्रंप के बड़बोलापन आदि अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मसलों पर लगभग चुप रहने वाले प्रधानमंत्री ने इसे लेकर राष्ट्र के नाम संदेश दिया। अपने तकरीबन आधे घंटे के संबोधन में विपक्ष को कोसते हुए जिम्मेदार ठहराया तथा दोनों राज्यों की महिला मतदाताओं से पार्टी के पक्ष में सहानुभूति अर्जित करने की कोशिश की। संचार माध्यमों के अध्ययन से यह स्पष्ट होने लगा है कि बंगाल और तमिलनाडु के चुनावी प्रचार में महिला सशक्तिकरण का मुद्दा भी आम चर्चा में है। हाल के बिहार चुनाव में महिला सशक्तिकरण के नाम पर जिस तरह से नगद राशि बांटकर महिला वोट हथियाने की कोशिश हुई थी ठीक उसी तर्ज पर बंगाल और तमिलनाडु की महिलाओं को भी सशक्तिकरण के नाम पर मुफ्त की रेवड़ी देने की घोषणाएं हुई हैं।

दोनों राज्यों के खजाने का सच किसी से छिपा नहीं है। दोनों ही राज्यों में पहले से चल रही लोक लुभावना योजनाओं के कारण बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च हो जा रहा है। दोनों ही राज्यों में किसी नई नगद राशि योजना को लागू करने का मतलब होगा की पहले से ही लगभग ठप्प पड़ी विकास योजनाओं के लिए भविष्य में धन का आवंटन और अधिक मुश्किल का सौदा हो जाएगा। पश्चिम बंगाल पहले से ही इतना आर्थिक दबाव में है कि वहां अभी तक सातवां वेतन आयोग ही पूरी तरह से लागू नहीं हो पाया है। राज्य के कर्मचारी अपनी पावती के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटा चुके हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2025 में बंगाल के राजस्व का 42% ब्याज में ही चला गया, वहीं तमिलनाडु में यह 28 प्रतिशत रहा।

समय-समय पर रिजर्व बैंक, सुप्रीम कोर्ट, आर्थिक विशेषज्ञ मुफ्त की योजनाओं को लेकर चिंता प्रकट कर चुके हैं। ऑफ द रिकॉर्ड विभिन्न राजनीतिक दलों के समझदार नेता भी इसे लोकतंत्र के लिए एक गलत व्यवहार बताते हैं लेकिन विभिन्न पार्टियों के चुनावी संतुलनकार मुफ्त की योजनाओं को जीत के फार्मूले के रूप में देखते हैं।

राजनीतिक पंडितों का तो यहां तक मानना है की दोनों राज्यों की महिला मतदाताओं को ध्यान में रखते हुए ही सत्ताधारी दल द्वारा संसद का विशेष सत्र आहूतकर महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए आनन फानन में मन माफिक संशोधन के साथ महिला आरक्षण बिल प्रस्तुत किया गया था।

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 35

जल ही जीवन है

आइये पानी बचाने का संकल्प लें

सहयोग
एक सामूहिक प्रयास

सहयोग द्वारा जनहित में जारी

Kalrav June 2026_Kalrav 6/15/2026 9:55 AM Page 36

RNI-UPHIN-2006/18176 Postal Regd. No. UP/GBD-199/2014-16 ISSN 2395-3829

अपने और अपने आसपास के लोगों का बचाव करें

तबीयत ठीक न होने पर घर पर ही रहें

अपने चेहरे, नाक और मुंह को छूने से बचें

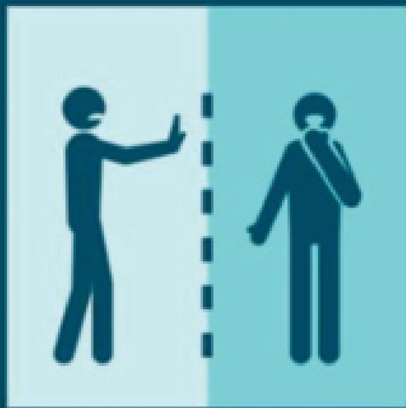

खांसी-जुकाम वाले लोगों से 1.5 मीटर की दूरी बनाएं

खांसी-जुकाम होने पर मुंह ढककर रखें

हाथों को लगातार धोते रहें

सहयोग की ओर से जनहित मे जारी